Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

भिक्षु वाणी

अज्ञान

कूआ तणो डेडक कूए रंजे,
तिण सायर लहर न दीठ।
ज्यूं साधां री संगत करी नहीं,
त्यांने लागें पाषंड मत मीठा।।

कुएँ का मेंढ़क कुएँ में राजी रहता है, क्योंकि उसने सागर की लहर नहीं देखी। जिन्होंने साधुओं को नहीं देखा है उन्हें पाखंड का मत मीठा लगता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 22 • अंक 39 • 5 - 11 जुलाई, 2021 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 03-07-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

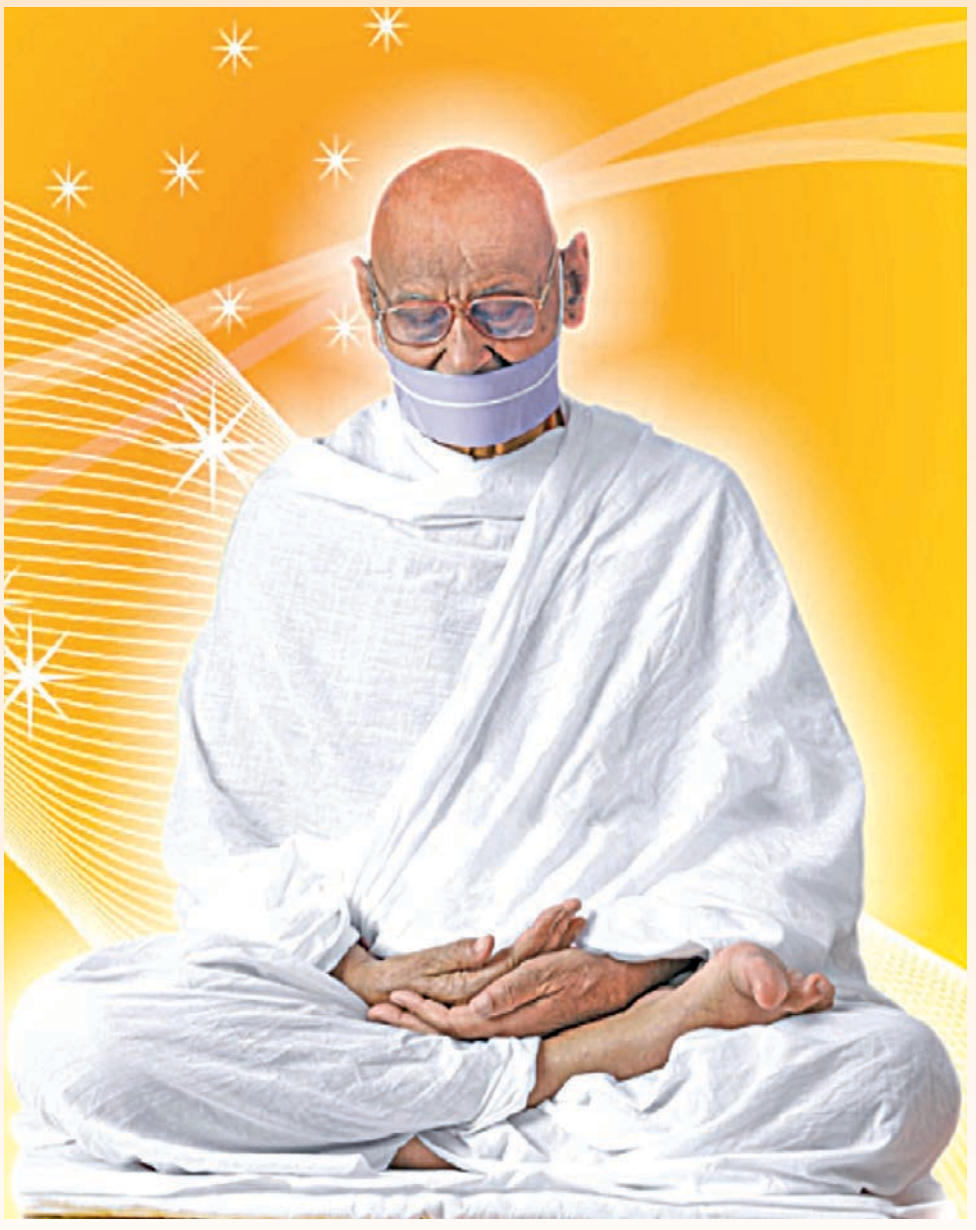

-: आचार्यश्री महाप्रज्ञ :-

१०२वाँ जन्म दिवस (प्रज्ञा दिवस)

आषाढ़ कृष्णा - १३ (७ जुलाई, २०२१)

दो अंकों की शीर्ष सांख्यकी प्रज्ञा की यह नई दिवाली।
प्रज्ञा दिवस कह रहा हमसे प्रज्ञामय हो हर रूंवाली।।

विश्व क्षितिज पर चर्चा तेरी जो दिए अनगिन अरमान।
युगों-युगों तक याद रहोगे पाए जो हमने वरदान।
हर्षित अवनि, हर्षित अंबर पा तुमसा अभिनव गणमाली।।

शुभ्र चंद्रमा से शीतल थे तेजस्वी हे परम प्रभाकर।
अंत:प्रज्ञा जगे निरंतर ज्योतिवलय मय हे रत्नाकर।
ऐसा आशीर्वर दो हे गुरुवर! गणवन में छाए खुशहाली।।

-- : श्रद्धाप्रणत : --

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

अर्थार्जन में संयम ना हो तो अर्थ अनर्थ बन जाता है : आचार्यश्री महाश्रमण

हसनपालिया, २६ जून, २०२१

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः हसनपालिया पधारे। प्रेरणा प्रदान करते हुए समय के विज्ञ पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि दो शब्द हैं–भोग-योग। आदमी के जीवन में पदार्थों आदि का भोग चलता है। योग का प्रयोग भी जीवन में चलता है। भोग के कारण शरीर को पोषण मिल सकता है और शरीर का नुकसान भी हो सकता है। भोग से आत्मा का नुकसान भी हो सकता है।

योग जिसके साथ अध्यात्म जुड़ा हुआ हो, आत्मा को संपोषण देने वाला बन सकता है। आदमी पदार्थों को भोगता है या फिर भोग आदमी को भोगने लग जाते हैं। संस्कृत श्लोक में मनीषी कहता है कि भोगों को हमने नहीं भोगा, भोगों ने हमको भोग लिया। नशा करने वाला पहले शराब को पीता है, बाद में शराब आदमी को पीने लग जाती है।

भोगी आदमी संसार में भ्रमण करता है, अभोगी आदमी संसार से मुक्त हो जाता है। भोगों में लेप होता है, चिपकाव होता है, उससे कर्मों का बंध भी हो जाता है। जो आदमी आत्मा को दुषित करने वाले भोगों में लिप्त रहता है, वह मूढ़, अज्ञानी, मंद आदमी उसी प्रकार कर्मों में चिपक जाता है, जैसे श्लेष्य में मक्खी चिपक जाती है।

गृहस्थ जीवन में सांसारिक भोग भी चलते हैं। आदमी को चाहिए एकांत भोग नहीं, साथ में योग-साधना भी चले। भोग पर योग का अंकुश रहे। अर्थ और काम, धर्म और मोक्ष ये चतुर्वर्ग हैं। अर्थ, काम गार्हस्थ्य में अपेक्षित होता है। पैसा भौतिक दुनिया का ईश्वर है। सांसारिक जीवन में पैसे का साम्राज्य चलता है।

अर्थ, काम और धर्म के बिना आदमी का जीवन पशु के समान है। इन तीनों में भी धर्म ज्यादा श्रेष्ठ है। धर्म से विहीन जिसके दिन-रात बीतते हैं, वह आदमी जीवन जीते हुए भी मुर्दा है, जैसे लुहार की धोंकणी। अर्थ-काम भी गृहस्थ में अपेक्षित होता है।

गरीबी की रेखा है, तो अमीरी की भी रेखा निर्धारित होनी चाहिए। अर्थ के साथ संयम-विवेक न हो तो कभी अर्थ-अनर्थ रूप में बन सकता है। अर्थ एक साधन है, काम उसका साध्य है। धर्म शून्य अर्थ और काम है, तो वह नुकसान करने वाला हो सकता है। धर्म एक अंकुश है। अर्थ और काम रथ के दो पहिए हैं। उस पर धर्म रूपी नियंत्रण चाहिए। तो रथ ठीक चल सकता है।

गृहस्थ जीवन में अणुव्रत व प्रेक्षाध्यान एक अंकुश है। भोग में जो लिप्त है, निमग्न है, वो आदमी उसी प्रकार कर्मों से चिपक जाता है, जैसे मक्खी श्लेष्य में चिपक जाती है। फिर मोक्ष की ओर जाना बंद हो जाता है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
5 - 11 जुलाई, 2021

✦ *प्रवृत्ति को छोड़ना कठिन है, परंतु प्रवृत्ति में होने वाली आसक्ति को छोड़ा जा सकता है। फिर प्रवृत्ति तुम्हारी आत्मा को मलिन बनाने वाली नहीं बनेगी।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य तुलसी प्रबल पुरुषार्थ के धनी थे : आचार्यश्री महाश्रमण

जावरा, २७ जून, २०२१

गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी की २५वीं पुण्यतिथि। २४ वर्ष पूर्व गुरुदेव श्री तुलसी का गंगाशहर में महाप्रयाण हो गया था। महाप्रयाण गुरुदेव तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशास्ता थे। उन्होंने पूरे विश्व में तेरापंथ धर्मसंघ का परचम लहराया था। वे तेजस्वी महापुरुष थे।

गुरुदेव तुलसी के परंपर पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने इस प्रसंग पर मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि दसवेंआलियं में आचार्य अभिवंदना कई श्लोकों के माध्यम से की गई है। श्लोक में बताया गया है कि चंद्रमा के साथ आचार्य को तुलित किया गया है, उपस्थित किया गया है।

जैसे आकाश में चंद्रमा होता है, चाँदनी से युक्त, नक्षत्र-तारागण से घिरा हुआ। इसी प्रकार गणी-आचार्य साधुओं के मध्य में चंद्रमा की तरह शोभायमान होता है। भिक्षु संघ में आचार्य की मुख्यता होती है। आचार्य की निश्रा में साधु-साध्वी संघ चलता है।

आज का दिन गणाधिपति परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के साथ जुड़ा है आषाढ़ कृष्णा तृतीया और आचार्य तुलसी के जीवन का ये अंतिम दिन। मैं तो उस दिन का साक्षी हूँ। दिनेश जी भी थे। पहले एकांतवास कर रहे थे, बाद में तेरापंथ भवन पधारे थे। उस समय के घटना प्रसंग को विस्तार से समझाया। अंतिम दिन को पैरों की सफाई का अवसर मुझे मिला।

आज के दिन एक महान चंद्रमा अदृश्य हो गया। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी को मैंने निकटता से देखा है, उनकी निकटता में

रहने का मौका मिला है। उस व्यक्तित्व में पुरुषार्थ की चेतना अच्छी थी। कई बार रात १२ बजे तक नहीं पोढ़ाते थे। लंबी यात्राएँ की। तेरापंथ के प्रथम आचार्य थे जो कोलकाता पधारे थे, दक्षिण भारत की यात्रा की थी। बड़े समुदाय के साथ यात्राएँ की थीं।

यात्रा का परिश्रम, लोगों से संपर्क और फिर संघीय दायित्व। एक पुरुषार्थी व्यक्तित्व के रूप में मैं आचार्य तुलसी को देखता हूँ। कितनों को प्रेरणा देते थे ताकि वो विकास कर सकें। वो कहते थे, मैं ऊपर जाकर देखूँगा कि कैसे पीछे काम करते हो। आचार्य तुलसी में प्रेम भी बहुत था। बचपन में मेरे पर कड़ाई की पर बाद में मेरे पर वात्सल्य बरसाते थे। वे पथदर्शक भी थे। प्रेम, करुणा, वात्सल्य बहुत था।

उनमें प्रबुद्धता थी। लकीर के फकीर नहीं थे। आदमी को समीक्षक बुद्धि से काम करना चाहिए। जरूरी नहीं पुरानी सारी चीजें सही हो। आदमी को औचित्य और समय के अनुसार एडजस्टमेंट बैठाना चाहिए। आज के समय में सर्वाधिक उपयुक्त क्या है? वो कार्य करो। पुराने को छोड़ो कुछ नया जोड़ो। उनमें वो प्रबुद्धता थी। मानो उन्होंने अपने संघ में, अपने परिवेश में कुछ नया जोड़ दिया।

हर नई बात ठीक है, जरूरी नहीं। नई-पुरानी की समीक्षा कर लो। किसको तो छोड़ देना, क्या नया जोड़ देना, क्या यथावत चालू रखना है, इस विषय में जो प्रबुद्धता होती है, वह व्यक्ति अच्छा विकास कर सकता है। आचार्य तुलसी में ये प्रबुद्धता थी। उन्होंने आचार्य-पद को भी छोड़ दिया। आई हुई सत्ता को छोड़ना मुश्किल काम है। इस कार्य की पृष्ठभूमि को देखना तो थोड़ी गहरी बात है।

कई बार कार्य सामने आ जाता है, कारण सामने नहीं आता। यह बहुत ऊँची बात है। सत्ता को छोड़ना उनका ये त्याग-बलिदान था। तेरापंथ के इतिहास की कई बातें उनकी जानकारी में थी। तेरापंथ के सिद्धांतों के भी वो अच्छे जानकार थे।

प्राचीन राग-रागणियों का व गायन का भी उनमें कौशल था। राजस्थान की राग-रागणियों का कितना सूक्ष्म ज्ञान था। अपने गुरु कालूगणी के प्रति कितनी श्रद्धा-निकटता थी। उन्होंने लंबे काल तक हमारे धर्मसंघ का नेतृत्व किया। करीब ६०-६१ वर्ष तक धर्मसंघ के सर्वोच्च पद पर रहे थे। आज उनकी पुण्यतिथि मना रहे हैं। मैं गुरुदेव तुलसी को श्रद्धा के साथ वंदन करता हूँ। ऊपर जाकर देखते हैं, तो मेरा करेक्शन कराते रहें। मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

मुख्य मुनिप्रवर ने कहा कि गुरुदेव तुलसी का जीवन एक विविध विलक्षणताओं का समवाय था। उनके जीवन का पूर्वार्द्ध और उत्तरार्ध उदितोदित था, कारण वे पुरुषार्थी और समयज्ञ पुरुष थे। उन्होंने अशांत विश्व को शांति का संदेश दिया था।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि गुरुदेव तुलसी के पास विजन था और एक्शन भी था। उन्होंने धर्मसंघ को विकास के पथ पर आरूढ़ किया था। वे चिंतन करते थे और उसे साकार रूप देने के लिए तत्पर रहते थे। उन्होंने शिक्षा-संस्कृत और व्यक्तित्व विकास के लिए सघन प्रयास किया।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि वे तेजस्वी महापुरुष थे। उन्होंने शक्ति का गोपण नहीं किया, बल्कि सम्यक् उपयोग शक्ति का करके अनेक कार्य धर्मसंघ में किए।

मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि गुरुदेव तुलसी का जीवन बहुआयामी था। उनमें वचन-सिद्धि थी। वे राजर्षि थे।

पूज्यप्रवर के स्वागत में जावरा के विधायक राजेंद्र पांडे, कॉलेज के चेयरमैन जी०एल० पटेल ने अपने भावों की अभिव्यक्ति देते हुए रतलाम जिले में चतुर्मास करने की पुरजोर प्रार्थना की व श्रीचरणों में प्रतिवेदन अर्पित किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने कहा कि आचार्य तुलसी मनुष्य के निर्माता थे।

तप-स्वाध्याय से अपनी आत्मा को जीतने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

रतलाम, २३ जून, २०२१

रतलाम में त्रिदिवसीय प्रवासरत जिनशासन प्रभावक महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्रकार ने युद्ध की बात बताई है। युद्ध हिंसापूर्ण भी हो सकता है और युद्ध अध्यात्म से जुड़ा हुआ भी हो सकता है।

एक संदर्भ में जो शास्त्र में युद्ध की बात आई है, उसे धर्म-युद्ध भी कहा जा सकता है कि लड़ो। दूसरे मनुष्यों से लड़ने वाला मूढ़ हो सकता है और स्वयं से लड़ने वाला बुद्ध हो सकता है। वीतराग और केवलज्ञानी बन सकता है। दूसरों से लड़ना बाहर का युद्ध है स्वयं से युद्ध लड़ना भीतर का युद्ध होता है।

शास्त्रकार ने कहा है कि तुम्हें बाहर के युद्ध से क्या मतलब है। अपने आपसे लड़कर, अपने आपको जीतकर आदमी सुख प्राप्त कर लेता है। आत्म युद्ध की अपेक्षा है। अपने आपसे कैसे लड़ें? आत्मा से आत्मा लड़े। भाव आत्मा से युद्ध करें। कषाय आत्मा, अशुभयोग आत्मा से, मिथ्यादर्शन आत्मा से लड़ने की बात है।

हमें जिसे परास्त करना है, वो कषाय आत्मा है। परास्त करने वाली चारित्र शुभ योग आत्मा, सम्यक् दर्शन आत्मा और उपयोग आत्मा है। इनसे हम कषाय आत्मा को परास्त कर सकते हैं। चारित्र आत्मा से कषाय आत्मा पर प्रहार हो। मोहनीय कर्म का औदायिक भाव है, उसको कषाय आत्मा का मुख्य तत्त्व मान लें। चारित्र आत्मा, शुभ योग आत्मा का मुख्य तत्त्व है, मोहनीय कर्म का क्षयोपशम भाव या क्षायिक भाव, वो मूल प्रहार करने वाला है। मोहनीय का विलय तत्त्व मूल है।

आत्म सुखों की प्राप्ति में कषाय ही बाधक तत्त्व है। साधु के लिए सर्वसावद्य योग का तीन करण-तीन योग से यावज्जीवन त्याग होता है। ये साधु की विराटता है। गृहस्थ सामायिक में छः कोटि या ८ कोटि तक के त्याग करते हैं। नौ कोटि की भी हो सकती है। तीनों मान्य हैं। ये सापेक्ष है। तात्कालिक रूप में हो सकती है। प्रत्यक्ष रूप में न हो पर परोक्ष रूप में श्रावक के सावद्य क्रिया कई कारणों से चलती है।

साधु का त्याग निर्पेक्ष, निरागार है। ये साधना कषाय आत्मा पर एक तरह से प्रहार है। पर साधु भी छद्मस्थ है, कभी योगों में आ जाए तो योग सावद्य बन सकता है। प्रमाद आ जाए तो आलोचन-शुद्धि होनी चाहिए। योग में कषाय नहीं आता है तो योग निर्मल है।

पाप कर्म का मूल जिम्मेवार कषाय है। योग को तो जैसी हवा मिलती है, वैसा हो जाता है। तेरहवें गुणस्थान में योग तो है, पर कषाय नहीं है तो कर्म बंधता है, तुरंत झड़ जाता है। चारित्र आत्माएँ ध्यान दें कि मेरी कषाय-मान्यता रहे। प्रशांत चित्त वाले हो। क्रोध-मान, माया, लोभ वाले हो। गुस्से में तेजी न आए, मंदता रहे। न्यारा में भी कषाय मंदता रहे तो सिंघाड़े की शोभा रहती है। अनासक्त भाव रहे।

आसक्ति वाला उपभोग न करें। अच्छी कषाय मंदता की साधना करें। स्वाध्याय जप आदि-आदि के द्वारा भी हम आत्म युद्ध में सफलता पाने की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। ये आत्म-युद्ध का संदेश उत्तराध्ययन आगम में दिया गया है। हम साधु-साध्वियाँ आत्म-युद्ध की साधना में पुरुषार्थ यथोचित्य करते रहें, यह काम्य है।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि यथासंभवतया ६ जुलाई को जावद में पहुँचने का भाव है। जावद में २ रात प्रवास करने का भाव है। यथासंभव साध्वीप्रमुखाश्री जी से हमारा आध्यात्मिक मिलन ५ जुलाई को नीमच या आसपास हो जाना चाहिए। मुनि वर्धमान कल बहिर्विहार में जा रहे हैं। मुनि वर्धमानकुमार जी ने अपनी भावना व्यक्त की। मुनि वर्धमानजी को अग्रणी की वंदना करवाई।

शासनश्री साध्वी करुणाश्री सुजानगढ़ की स्मृति सभा

पूज्यप्रवर ने साध्वीश्री जी का परिचय देते हुए फरमाया कि उनकी दीक्षा २०२० में पोष शुक्ला दशमी को हुई थी। उन्हें लंबे काल तक 'शासन गौरव' साध्वी राजीमती के साथ रहने का मौका मिला। अनेक प्रांतों की यात्रा की थी। सिलीगुड़ी मर्यादा महोत्सव पर मैंने उन्हें शासनश्री अलंकरण से विभूषित किया था। वे नोखा मंडी में थी। स्वास्थ्य अनुकूलता नहीं रही थी वि०सं० २०७८ जेष्ठ शुक्ला पंचमी १६ जून, २०२१ को वे कालधर्म को प्राप्त हो गई थी। चौविहार अनशन भी कराया गया।

साध्वी करुणाश्री जी हमारे धर्मसंघ की अच्छी साध्वी थी। एक सिंघाड़े में जमकर रहना भी बहुत अच्छी बात होती है। हम उनके प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना करते हैं। साध्वी राजीमती जी आदि साध्वियाँ खूब चित्त समाधि में रहें। चार लोगस्स का मध्यस्थ और मंगलभावना से ध्यान करवाया।

मुख्य मुनिप्रवर, मुख्य नियोजिका जी ने भी उनके प्रति आध्यात्मिक भावना स्वरूप श्रद्धांजलि अर्पित की।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

अपनी आत्मा को जीतने वाला परमजयी होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

रतलाम, २४ जून, २०२१

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जी का रतलाम प्रवास का तृतीय दिवस। तेरापंथ के महामहिम ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में जय और पराजय की बात चलती है। युद्ध होता है तो कौन जीता कौन हारा? एक महत्त्वपूर्ण बात युद्ध के संदर्भ में होती है।

चुनाव व अन्य संदर्भों में हार-जीत हो सकती है। जीत को जय कहते हैं। शास्त्रकार ने एक ऊँची बात बताई है कि परम जय किसकी हो सकती है। कोई योद्धा दुर्जन संग्राम में दस लाख योद्धाओं को जीत लेता है, कितनी बड़ी बात है। पर एक संदर्भ में ये परम जय नहीं है। जिसने एक अपनी आत्मा को जीत लिया, वह परम विजयी होता है।

अपनी आत्मा को जीत लेने का मतलब है, अपने कषायों को जीत लेना। अपनी इंद्रिय और मन को जीत लेना। आत्मा को जीत लिया तो हमारी परम जय हो गई। परम आराधना भगवान महावीर को परम जयी आत्मा कहा जा सकता है। साधिक साढ़े बारह वर्षों तक उनका मानो आत्मा के साथ युद्ध चला था। मोहनीय कर्म से लड़ते-लड़ते उनकी जीत हुई। मोहनीय कर्म का सर्वनाश हो गया।

सारे कर्मों में एक मोहनीय कर्म ही दमदार है। सेनापति को खत्म कर दिया तो सेना तो भागने वाली है। मोहनीय कर्म राजा-सेनापति है। अध्यात्म की साधना की मूल बात है, मोहनीय कर्म का नाश करना है, संघर्ष करना है। कई बार मोहनीय कर्म भी आत्मा को पछाड़ने का प्रयास करता है, कई बार सफल भी हो जाता है।

कहीं जीव विजय की ओर आगे बढ़ता है, तो कभी मोहनीय कर्म विजय की ओर आगे बढ़ता है। इतना तेजस्वी सूर्य होता है, फिर भी कभी बादल उसको ढक देते हैं। पर फिर सूर्य बाहर निकलता है और बादल छिन्न-भिन्न हो जाता है। आत्मा सूर्य है, बादल मोहनीय कर्म है। मोहनीय कर्म पूर्णतया नष्ट हो जाता है तो आत्मा की परम-विजय की स्थिति बन जाती है।

अणुव्रत में भी मोहनीय कर्म को कमजोर करने की बात हो जाती है। अणुव्रत को जैन-अजैन कोई अपना सकता है। छोटे-छोटे नियम अणुव्रत के हैं। प्रेक्षाध्यान के ये प्रयोग हैं, वो प्रियता-अप्रियता से मुक्त होकर देखना, ये भी मोहनीय कर्म को कमजोर करने की साधना है। अनुप्रेक्षाएँ भी सलक्ष्य ठीक की जाएँ तो मोहनीय कर्म के अंगों को कमजोर करने वाली साधना हो जाती है।

अपेक्षा है कि चोट कहाँ लगानी, यह एक दृष्टांत से समझाया। हर जगह चोट लगाना भी उचित नहीं है। मोहनीय कर्म में भी यह ध्यान रखना है किसके लिए कौन-सा अंग दबाना जिससे मोहनीय कर्म कमजोर पड़ जाए। अध्यात्म जगत में जय-पराजय की बात आई है। युद्ध की आत्मा को जीतने की बात हम इसको अध्यात्म की दृष्टि से जानें और प्रहार मोहनीय कर्म पर कहाँ करें, कैसे करें।

मोहनीय कर्म को जीतना है तो पहले ज्ञान तो होना चाहिए कि कैसे जीतें? जिस स्तर का आदमी है, उस स्तर का तरीका काम में लिया जाए तो उसे प्रतिबोध देने में सुगमता हो सकती है। ज्ञान सम्यक् हो। हम मोहनीय कर्म को कमजोर करने की दिशा में प्रविधियों को भी जानने का प्रयास करें। प्रविधियों का प्रयोग भी करें और आशा रखें, ऐसे प्रयोग करते-करते सम्यक् प्रयोगों से मोहनीय कर्म हमारा कमजोर भी पड़ सकेगा।

रतलाम में तीसरे दिन का प्रवास हो रहा है। रतलाम में खूब अच्छी धर्म की चेतना प्रबल रहे। साध्वी प्रबलयशा जी का सिंघाड़ा रतलाम चतुर्मास के लिए प्रयुक्त है। चारों साध्वियाँ खूब अच्छा काम रतलाम में करें।

अमृत गार्डन से अतिथि गार्डन में आ गए हैं। साधु अतिथि होता है। दोनों दक परिवार में धर्म की चेतना रहे। नैतिकता-अहिंसा का प्रभाव बना रहे, मंगलकामना।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

तप-स्वाध्याय से अपनी आत्मा को जीतने का...

(पृष्ठ २ का शेष)

जेसराज शेखाणी को 'समाज भूषण' अलंकरण

जेसराज शेखाणी आज प्रातः दर्शनार्थ आए थे। ९७ वर्ष के हो गए हैं। अमृतवाणी जो आज हो रही है। इनका ही योगदान रहा है। श्रद्धा-भाव अच्छे हैं। इस उम्र में इतनी दूर आए हैं। मुनि कुमारश्रमण जी ने उनके बारे में बातें बताई। गुरु वाणी, घर-घर पहुँचाणी, जेसराज शेखाणी ऐसे संत बात करते थे। मुनि कीर्तिकुमार जी ने भी उनके विषय में जानकारी दी। अमृतवाणी धर्मसंघ की संपत्ति है। उनको गुरुओं की कृपा दृष्टि प्राप्त है। मुनि विश्रुत कुमार जी ने भी उनके कार्यों की प्रशंसा की। तीनों गुरुओं का आशीष उन्हें प्राप्त हुआ है। मुनि योगेश कुमार जी ने कहा कि जेसराज शेखाणी इस शताब्दी के विशेष श्रावक हैं, जिन्होंने धर्मसंघ की अपूर्व सेवा की है। उनका श्रावकत्व अग्रिम पंक्ति का रहा है। मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि वह श्रावक धन्य होता है, जिसे गुरु की कृपा प्राप्त होती है। मुनि रजनीश कुमार जी ने कहा कि किसी श्रावक का जन्म दिवस गुरु सन्निधि में मनाया जाना विशेष बात है। मुनि जिनेंद्र कुमार जी ने कहा कि हमने आनंद श्रमणोपासक को देखा नहीं है, पर शेखाणीजी आचार्यश्री महाश्रमण जी के वैसे ही श्रावक हैं। मुनि कोमलकुमार जी भगवान महावीर के श्रावकों के समान जेसराज शेखाणी को बताया। मुनि दिनेश कुमार जी ने कहा कि ये गुरुदेव तुलसी की राग-रागिणियों की रिकॉर्डिंग करते थे। ये शम, सम और संवेग की प्रतिमूर्ति हैं।

साध्वीवर्याजी ने बताया कि मैं श्रावक जेसराज शेखाणी को देखती हूँ तो मुझे गुरुदेव तुलसी के श्रावक संबोध की पंक्तियाँ याद आ जाती हैं–'श्रावक है विमल विश्वासी---।' गुरुओं के प्रति गुरु श्रद्धा विरल है।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि कुछ व्यक्ति श्रद्धा संपन्न होते हैं, कुछ व्यक्ति साधना संपन्न होते हैं। जेसराज शेखाणी दोनों बातों से संपन्न हैं। श्रद्धा और साधना से शेखाणीजी का जीवन तेजस्वी बना है। शेखाणी जी ने अब तक का जो जीवन जीया है, उससे और अधिक श्रेष्ठ जीवन जीएँ।

मुख्य मुनिप्रवर ने कहा कि श्रावक शेखाणीजी के मन में अहंकार का भाव नहीं है। मन में निष्ठा है। रग-रग में संस्कार है कि मैं धर्मसंघ की ओर सेवा कर सकूँ। इन पर गुरुओं की महान कृपा रही है। ऐसे जागरूक, साधक श्रावक जेसराज शेखाणी १०० साल बाद भी धर्मसंघ की सेवा करते रहें और साधना में भी गतिमान रहें।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि साधना में हमें आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। श्रावकों में भी कई-कई विशेष साधना करने वाले श्रावक हैं। साथ में संघ निष्ठा भी है। आत्मनिष्ठा और साधना निष्ठा भी है। जहाँ कहीं अच्छी बात मिले हमें लेनी चाहिए। खाद्य संयम है, साधना है, कषायमंदता है, अर्हतवाणी के प्रति श्रद्धा-भक्ति है। जेसराज शेखाणी की खूब अच्छी साधना बढ़ती रहे। उनके जीवन में अध्यात्म का उपक्रम चलता रहे।

महासभा की ओर से भी अशोक बरमेचा ने घोषणा की कि जेसराज शेखाणी बीदासर को सन् २०२० के बीदासर मर्यादा महोत्सव के अवसर पर जैन शासन तेरापंथ के सर्वोच्च अलंकरण 'समाज भूषण' से अलंकृत किया जाएगा।

मुनि सिद्धप्रज्ञजी ने भी शेखाणी के प्रति मंगलभावना अभिव्यक्त की। ये साधक होने के साथ ज्ञानी और योग साधक हैं।

रतलाम की ओर से पूज्यप्रवर के स्वागत अभिवंदना में शिक्षा कोठारी ने गीत ज्योति पीपाड़ा, तेयुप अध्यक्ष हेमंत दक, किशोर मंडल, अंगूरबाला मांडोत, ललित दक, मोना बरलोटा, पायल बरलोटा, कन्या मंडल ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

मुनि सत्यकुमार जी जो लगभग १२ वर्षों तक रतलाम में रहे हैं, पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। गुरुदेव मैं इंगितागार संपन्न बन सकूँ ऐसा आशीर्वाद प्रदान कराएँ।

सन् २०२१ में रतलाम में चातुर्मास करने वाली साध्वी प्रबलयशा जी ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

मुनि योगेश कुमार जी ने रतलामवासियों की ओर से गुरुदेव से २०२४ के चतुर्मास के लिए अपनी बातें रखी। रतलाम वासी पूज्यप्रवर के चतुर्मास के लिए हर तरह से तैयार हैं।

रतलामवासियों ने पूरे जोर और जोश के साथ गुरुदेव से २०२४ का चतुर्मास रतलाम फरमाने की विनती की।

'तेरापंथ के राम, चतुर्मास दो रतलाम'

तेरापंथ युवक परिषद ने गीत के माध्यम से चतुर्मास की अर्ज की।

पूज्यप्रवर ने इस अवसर पर फरमाया कि सन् २०२४ के हमारे चतुर्मास के लिए अनुरोध किया जा रहा है। काफी व्यवस्थित तरीके से आवेदन किया जा रहा है रतलाम के लोगों में जोश भी प्रतीत हो रहा है। इस तरह से आवेदन करना भी अपने आपमें अच्छी बात है। योगक्षेम वर्ष कब मनाना है, अभी तय नहीं किया है। वो निर्णय हुए बिना अगले चतुर्मासों की बात कैसे की जाए।

२०२४ का चतुर्मास कहाँ करना है, अभी संगत नहीं है। यहाँ चतुर्मास हुए लंबा काल हो गया है। मालवा को भी चतुर्मास क्यों नहीं मिलना चाहिए। मालवा में ऐसे भी क्षेत्र हैं, जहाँ तेरापंथ के आचार्यों का चतुर्मास हुआ ही नहीं है। ऐसे क्षेत्र को भी विचार में लेना चाहिए। रतलाम की भावना अभी आई है। कन्या मंडल की प्रस्तुति बहुत अच्छी थी। इनकी शिक्षा का अच्छा उपयोग हो। स्थान की उपलब्धता भी आई है। अभी तो तीन वर्ष से साधिक समय २०२४ के चतुर्मास में शेष है। पर यह जोश आपका छूट न जाए। इसको आप समय-समय पर जितना अनुकूल हो जारी रखें। संपर्क भी बनाए रखें।

कार्यक्रम का संचालन भी मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अर्थार्जन में संयम ना हो तो अर्थ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गृहस्थ दिनचर्या में ध्यान दें योग साधना, धर्म साधना के लिए समय कितना निकाल पाते हैं। एक सामायिक रोज हो जाए तो मान लें जीवन में योग भी चल रहा है। योग साधना में संयम, तपस्या, ज्ञान-स्वाध्याय भी आ गए। योग व्यापक चीज है।

योग यानी जोड़ने वाला। मोक्ष से जोड़ने वाला सारा व्यापार, सारी प्रवृत्ति, धर्म की साधना योग है। आसन-प्राणायाम के साथ यम-नियम भी योग है। जीवन की दिनचर्या में योग साधना के लिए भी समय निकालें। ध्यान का प्रयोग करवाए। श्वास के साथ णमो सिद्धाणं को जोड़ दें। हम जीवन में योग की साधना करें तो मोक्ष से जुड़ सकते हैं।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि सत्कार्य में व्यस्त आदमी को दुःखी होने का समय ही नहीं मिलता है।

✦ *व्यक्ति पुण्योदय के दिनों में भी प्रमाद में न जाए, जागरूक रहे, सत्ता, संपत्ति आदि का दुरुपयोग न करे।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के कार्यक्रम

सास-बहू सेल्फी कॉन्टेस्ट

चेन्नई।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में साध्वी अणिमाश्री जी की प्रेरणा से चेन्नई तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में सास-बहू का आज के परिवेश में कैसे समन्वय रखा जा सके, एक-दूसरे की भावनाओं को कैसे समझा जाए। इसी आधार पर सास-बहू सेल्फी प्रतियोगिता रखी गई।

संयोजिका कंचन भंडारी का सहयोग महिला मंडल को मिला एवं प्रचार मंत्री लता पारख कवयित्री ने निर्णायक की भूमिका निभाई। इस प्रतियोगिता में कुल ३० सास-बहू की जोड़ी ने भाग लिया एवं प्रतियोगिता को अपार सफलता प्रदान की। तदर्थ सभी प्रतियोगियों के प्रति हार्दिक आभार। व्यक्त किया। प्रतियोगिता में प्रथम किरण-वनिता डूंगरवाल, द्वितीय राजकुमारी-सपना दुगड़ एवं मुक्ता-रीतिका चोरड़िया तथा तृतीय स्थान पर सज्जन बाई-हर्षा नाहर, सूरज-दीपमाला बाफना रहे।

सभी विजेताओं को चेन्नई तेरापंथ महिला मंडल की ओर से ढेरों बधाईयाँ दी गई। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए संयोजिका कंचन भंडारी का भरपूर सहयोग रहा।

कल्याण मंदिर स्तोत्र एवं चौबीसी प्रतियोगिता

चेन्नई।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में कल्याण मंदिर स्तोत्र एवं चौबीसी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कल्याण मंदिर के २५ से लेकर ३२वें श्लोक एवं १८वें एवं १९वें तीर्थंकर अरनाथ प्रभु एवं मल्लिनाथ प्रभु की गीतिका प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रचार प्रसार मंत्री संगीता आच्छा ने नमस्कार महामंत्र से किया।

अध्यक्ष शांति दुधोड़िया ने सभी बहनों का स्वागत किया एवं बहनों को प्रतियोगिता की शुभकामनाएँ दी। तत्पश्चात बहनों ने शुद्धता और राग के साथ चौबीसी सुनाई।

अमरनाथ चौबीसी प्रतियोगिता में प्रथम–रेखा बाफना एवं स्नेहा सेठिया संयुक्त रूप से रहे। द्वितीय स्थान पर सुमित्रा श्यामसुखा, पिंकी गेलड़ा एवं दमयंती बाफना रहे। तृतीय स्थान पर अलका खटेड़ एवं रतन बाई लुंकड़ रहे।

मल्लिनाथ चौबीसी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर दमयंती बाफना एवं रेखा बाफना रहे, चौबीसी प्रतियोगिता की संयोजिका सुरेखा दुगड़ ने निर्णायक की भूमिका निभाई।

कल्याण मंदिर स्तोत्र प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रेखा बाफना एवं सुमित्रा श्यामसुखा, द्वितीय स्थान पर सुभद्रा लुणावत एवं रतनबाई लुंकड़ रहे। संयोजिका पिंकी गेलड़ा ने निर्णायक की भूमिका निभाई। संयोजिका सहमंत्री रीमा सिंधवी ने कार्यक्रम का संचालन किया एवं धन्यवाद ज्ञापन मंत्री गुणवंती खटेड़ ने किया।

स्वस्थ परिवार स्वस्थ समाज

राजाराजेश्वरी नगर।

अभातेममं द्वारा संचालित जागृति महाभियान-अन्नपूर्णा कार्यक्रम के अंतर्गत लगातार भाई-बहनों को वैक्सीन लगवाई जा रही है। तेरापंथ भवन में आयोजित एक शिविर में महिला मंडल की ओर से कन्या मंडल की सभी १८ प्लस लड़कियों एवं मंडल की बहनों को भी वैक्सीन लगवाई गई। 'वैक्सीन युक्त-कोरोना मुक्त' समाज की दिशा में मंडल द्वारा उठाया कदम महत्त्वपूर्ण साबित हुआ। महिला मंडल की तरफ से अब तक ६० से अधिक लोगों को वैक्सीन लग चुकी है। जिनके किसी वजह से अभी भी वैक्सीन लगनी बाकी है उन्हें भी यथोचित समय आने पर वैक्सीन लगवाने की योजना है।

अध्यक्ष सरोज बैद के निर्देशन में सभी योजनाएँ सुचारु रूप से चल रही है। मंत्री शोभा बोथरा सहित अनेक बहनों का श्रम नियोजित हुआ।

कविता प्रतियोगिता का आयोजन

जसोल।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं के तत्त्वावधान में महिला मंडल अध्यक्ष मंजुदेवी भंसाली के अध्यक्षता में लर्न, अनलर्न और रिलर्न कार्यशाला के अंतर्गत 'सास-बहू की प्यारी जोड़ी' कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेममं की बहनों द्वारा नमस्कार महामंत्र के मंगलाचरण से हुआ। सास-बहू के रिश्ते पर पुष्पा देवी बुरड़ ने पहले कविता के माध्यम से व अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर कविता प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। निर्णायक की भूमिका युवा कवि अशोक प्रदीप ने निभाई। प्रतियोगिता में कुल १२ प्रतिभागियों ने अपनी कविता का वाचन किया। जिसमें प्रथम स्थान ललिता मेहता ने प्राप्त किया। बहनों की उपस्थिति सराहनीय रही। अंत में आभार ज्ञापन किया। मंडल मंत्री ममता मेहता ने किया। कार्यक्रम का संचालन ललिता मेहता ने किया।

मासखमण तप अभिनंदन

हैदराबाद।

ग्रीष्म ऋतु की भीषण गर्मी, ऊपर से कोरोना का आतंक, तरह-तरह के न्यू स्ट्रेन से जहाँ आदमी अपनी सुरक्षा के हर संभव उपाय कर रहा है, वहाँ ३३ दिन का निराहार तप प्रबल आत्मबल का परिचयक है–ये उद्गार साध्वी निर्वाणश्री जी ने भीखमचंद नखत के तप के उपलक्ष्य में अभिव्यक्त किए। नेक्लेस प्राइड में नखत ने तप के पारणा के अवसर पर विदुषी साध्वीश्री जी के सान्निध्य में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के संदेश का वाचन राजेश नखत ने किया।

साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने नखत की धर्मपत्नी के प्रति भक्ति, गुरुभक्ति और गुरु सेवा को आदर्श बताया। अपनी शादी की स्वर्ण जयंती पर ऐसा अनूठा उपक्रम कोई विरला व्यक्ति ही कर सकता है। साध्वीश्री ने सघरचित गीत के द्वारा भीखमचंद नखत के तप का अनुमोदन किया, जिसे सहस्वर दिया साध्वी कुंदनयशा जी एवं साध्वी मधुरप्रभा जी ने। ज्ञात है कि साध्वी निर्वाणश्री जी स्वयं तप पारणा के अवसर पर डी०वी० कॉलोनी से कावड़ीगुड़ा पधारी, जिससे पूरे नखत परिवार सहित नेक्लेस प्राइडवासी भाव-विभोर हो गए। सायंकालीन सामायिक में अशोक दुगड़ के निवास में एक नया ही नजारा देखने को मिला। जिसमें सूरत, गुवाहाटी आदि क्षेत्रों से समागत मनोज सुराणा, दिलीप दुगड़ आदि तथा ललित बैद, मंजु दुगड़, सुशीला बैद, राजेश नखत, मदन देवी दुगड़, मुकेश चोरड़िया आदि अनेक भाई-बहनों ने धर्माराधना का लाभ लिया।

भीखमचंद नखत को लगभग ६ दिनों तक शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी व साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य अभिनव गीतों द्वारा तप की वर्धापना की गई। तप की मंजुल स्वरलहरियों से भवन प्रांगण गूंजता रहा। साध्वीद्वय की सन्निधि में समय-समय पर सहवर्ती साध्वियों ने सह-संगान कर तप अनुमोदना की।

ज्ञानशाला स्टार ज्ञानार्थी सम्मान समारोह का आयोजन

अमराईवाड़ी-ओढ़व।

तेरापंथी सभा निर्देशन में ज्ञानशाला स्टार ज्ञानार्थी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। सम्मान समारोह का शुभारंभ ज्ञानशाला गुजरात अंचल के संयोजक प्रवीण मेडतवाल के द्वारा नमस्कार महामंत्र से किया गया। मंगलाचरण अमराईवाड़ी ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी के द्वारा किया गया। सभा अध्यक्ष रमेश पगारिया ने स्वागत वक्तव्य में पधारे हुए सभी महानुभावों एवं सभी प्रशिक्षिकाओं का स्वागत-अभिनंदन किया। ज्ञानशाला संयोजक राजेंद्र बाफना ने ज्ञानशाला की संक्षिप्त जानकारी दी।

मुख्य प्रशिक्षिका आरती दुगड़ ने ज्ञानशाला की संपूर्ण गतिविधियों की जानकारी से अवगत कराया। गोष्ठी में आए हुए क्षेत्रीय संयोजिका आशा खाब्या ने अपना मार्गदर्शन दिया। गुजरात अंचल के सह-संयोजिका अंजना झाबक ने ई-ज्ञानशाला की जानकारी प्रदान की प्रतिक्रमण ड्रीम की सह-संयोजिका पूजा मेहता ने सभी ज्ञानार्थी को विधि सहित पूरा प्रतिक्रमण कंठस्थ करने के लिए कहा गया और ज्ञानार्थिओं को स्टार ज्ञानार्थी घोषित किया। सभी प्रशिक्षिका व अभिभावकों को प्रतिक्रमण को प्रतिक्रमण याद करने के लिए कहा कि गुजरात अंचल के आंचलिक संयोजक प्रवीण मेडतवाल ने रोचक उदाहरण से समझाया और सभी को प्रतिक्रमण याद करना है। कार्यक्रम का आभार ज्ञापन वंदन पगारिया ने किया।

अपनी आत्मा को जीतने वाला...

(पृष्ठ ३ का शेष)

पूज्यप्रवर के स्वागत, अभिवंदना में अतिथि गार्डन के पीयूष दक, अरविंद दक, प्रिया कोठारी, पुनीत भंडारी (मंत्री तेयुप), महिला मंडल से सुनीता कोठारी, सुहानी दक, अंजना दक, मालवा सभा के मंत्री, उपासिका चंदनबाला दक, उपासिका प्रेक्षा मांडोत, पविधि मेहता, मोना कोठारी, देवेंद्र मेहता, प्रिया दक, ज्योति दक, निशा दक, तेरापंथी युवतियाँ, धर्मेन्द्र बम्ब, पर्व नागौरी, सुखराज सेठिया व सुनीता ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर ने मुनि सिद्धप्रज्ञ जी को प्रेरणा देते हुए फरमाया कि पहले ये समण थे, बाद में श्रमण बन गए हैं। नाम के अनुसार प्रण सिद्ध हो जाए। भावतः भी सिद्ध प्रज्ञता रहे।

योगक्षेम अभातेयुप योगक्षेम योजना

सत्र 2019-21

✲ अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् मुम्बई साथीगण	(₹75,00,000)
✲ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र 2017-19	(₹31,00,000)
✲ श्री मदनलाल महेन्द्र तातेड़, मुम्बई	(₹13,00,000)
✲ श्री कन्हैयालाल विकासकुमार बोथरा, लाडनूं-इस्लामपुर	(₹11,00,000)
✲ श्री अशोक श्रेयांश बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	(₹11,00,000)
✲ श्री फतेहचंद-संतोष देवी, धीरज, पूजा, अर्हम सेठिया, लुधियाना	(₹5,51,000)
✲ श्री सागरमल दीपक श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	(₹5,00,000)
✲ श्री उमरावमल, प्रमोद, महेन्द्र, नरेन्द्र छाजेड़, रामगढ़ शेखावाटी-कोलकाता-जयपुर	(₹5,00,000)
✲ श्री माणकचंदजी सतीशजी ललितजी चोरड़िया (अमराईवाड़ी ओढ़व)	(₹5,00,000)

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १०२वें जन्मदिवस पर विशेष

प्रज्ञा के सागर थे आचार्य महाप्रज्ञ

❐ मुनि कमल कुमार ❐

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का जन्म राजस्थान के थली संभाग के टमकोर गाँव में पिता तोलाराम जी माता बालू देवी की कुक्षी में हुआ। टमकोर एक साधारण गाँव था जहाँ ना तो रेल आती, ना कोई सड़क ना कोई विद्यालय परंतु वहाँ के लोग जैन श्वेतांबर तेरापंथ संघ के अनुयायी थे। वहाँ समय-समय पर साधु-साध्वियों का आना-जाना रहता था। कई बार चतुर्मास भी होते थे। लोगों में साधु-साध्वियों के दर्शन, सेवा, प्रवचन सुनने आदि की भावना रहती थी, जिससे उन्हें समय-समय पर धार्मिक संस्कार मिलते रहते थे।

आचार्य महाप्रज्ञ जी का नाम नथमल था। छोटी अवस्था में ही आपके पिताजी श्रीमान तोलाराम जी का निधन हो गया था। घर की सार-संभाल करने वाला कोई नहीं था। इसलिए माता बच्चों को लेकर पीहर चली गई। पीहर वाले काफी सक्षम थे। नथमल जी का लालन-पालन ननिहाल में हुआ। बड़े होने पर पारिवारिक जन पुनः सबको टमकोर ले आए। वहाँ उस समय मुनिश्री छबील जी का चतुर्मास था। पारिवारिक सदस्य सेवा दर्शन का पूरा लाभ लेते थे। मुनि छबील जी के सहयोगी मुनि मूलचंद जी ने बालक नथमल को कुछ तत्त्व ज्ञान करवाया और संसार की नश्वरता का बोध करवाया जिससे नथमल के हृदय में वैराग्य भावना उत्पन्न हो गई। नथमल ने माता से दीक्षा की बात कही तब माता ने कहा जब तू लेगा तो मैं घर पर रहकर क्या करूँगी मैं भी दीक्षा लेकर तुम्हारे साथ साध्वी बन जाऊँगी। माँ-बेटे दोनों मन को पक्का बना रहे थे। संतों ने उन्हें पूज्य कालूगणी के दर्शनों की प्रेरणा दी और माँ-बेटे गोपीचंद जी के साथ पूज्य कालूगणी के दर्शनार्थ गंगानगर गए। उस समय यातायात के साधनों की दिक्कत थी। गंगानगर में पूज्य कालूगणी के प्रथम दर्शन और प्रवचन से बालक नथमल का वैराग्य और अधिक पुष्ट हो गया और पूज्य कालूगणी से दीक्षा की अर्ज की। पूज्यप्रवर ने माँ-बेटे की भावना पर ध्यान देते हुए साधु प्रतिक्रमण की आज्ञा प्रदान की।

टमकोर पहुँचते ही संतों ने उन्हें प्रतिक्रमण आदि आवश्यक तत्त्वों का ज्ञान करवाया। पूज्य कालूगणी गंगाशहर के पश्चात सरदारशहर मर्यादा महोत्सव के लिए पधार रहे थे। माँ-बेटे ने सरदारशहर से पूर्व सालासर में गुरुदेव के दर्शन करके दीक्षा की अर्ज की पूज्य गुरुदेव ने बालक नथमल की दीक्षा प्रणाली पर माता को अनुमति नहीं मिली नथमल के आग्रह भरे निवेदन पर ध्यान देकर माता बालू जी की दीक्षा फरमा दी। सरदारशहर मर्यादा महोत्सव पर आपकी दीक्षा हुई। दीक्षित होते ही पूज्यप्रवर ने आपकी शिक्षा साध्वाचार आदि के प्रशिक्षण के लिए मुनि तुलसी के पास नियुक्ति की मुनि तुलसी ने अपनी गहरी सूझ-बूझ से नवदीक्षित मुनि नथमल का ऐसा निर्माण किया वे महाप्रज्ञ के रूप में उभरकर आए। मुनि नथमल जी की विनम्रता, सरलता, आचारनिष्ठा, गुणग्राहकता, सहिष्णुता, अध्ययनशीलता, कर्तव्यपरायणता अद्वितीय थी। आप इन्हीं गुणों के कारण द्वितीया के चंद्रमा के समान प्रवर्धमान रहे। मुनि तुलसी जब आचार्य बन गए तब भी आपको उनकी निकट सेवा का दुर्लभ अवसर प्राप्त होता रहा। आगम तत्त्व सिद्धांतों के गहराई से समझकर आप एक अच्छे साहित्यकार, प्रवचनकार व्याख्याकार बनें। आपने हिंदी, संस्कृत, प्राकृत, राजस्थानी भाषा में जो साहित्य लिखा उसे पढ़कर पाठकगण आपकी मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हैं।

आप हिंदी, संस्कृत, प्राकृत भाषा के आशुकवि थे। उनकी प्रज्ञा के आगे सभी नतमस्तक थे। उन्होंने केवल जैन और तेरापंथ के लोगों के दिलों में ही नहीं अपितु मूर्धन्य साहित्यकार, चिंतक, वैज्ञानिक, राजनेता, उद्योगपतियों के दिलों में भी गहरा स्थान बनाया।

आपकी कार्यक्षमता को देखकर आचार्य श्री तुलसी ने अपने रहते ही अपना आचार्य पद विसर्जन कर महाप्रज्ञ जी को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। यह तेरापंथ धर्मसंघ में नवीन कार्य कहा जा सकता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने जीवन के अंतिम दिवस तक सक्रिय जीवन जीया। प्रवचन, लेखन, अध्यापन सब व्यवस्थित चले। आपने आचार्यश्री तुलसी के महाप्रयाण के पश्चात अपने उत्तराधिकारी की विधिवत घोषणा कर पूर्ण निश्चित हो गए थे। वि०सं० २००६ को ज्येष्ठ एकादशी के दिन सरदारशहर में आपका महाप्रयाण हो गया। यह भी एक दुर्लभ योग ही था कि सरदारशहर में ही आपने दीक्षा ली। अग्रगण्य बनकर प्रथम चतुर्मास सरदारशहर में ही किया और अंतिम समय भी सरदारशहर वासियों को मिला।

आपकी अनेक विशेषताओं को जड़ लेखनी से लिख पाना साधारण व्यक्ति का काम नहीं है। आपके १०वें जन्मदिवस पर यही मंगलकामना करते हैं कि आप द्वारा दर्शित पथ का अनुसरण करके आचार्य महाश्रमण जी की छत्रछाया में संयम पर निर्बाध गतिमान बने रहें।

प्रज्ञा के अवतार आचार्य महाप्रज्ञ

● शासनश्री साध्वी सुमनश्री ●

ज्योति पुरुष आये धरती पर प्रज्ञा के अवतार।
महाप्रज्ञ चरणों में वंदन सौ-सौ बार।।आ।।

पुण्य धरा टमकोर कल्पतरु लहराया।
होनहार शिशु चोरड़िया कुल में आया।
माँ बालूजी को मानों कोई मिल गया मुक्ताहार।।

बचपन में माता का आशीर्वाद मिला
चोट नहीं बेटा यह आज्ञा चक्र खुला।
गुरु कालू से पाया संयम जगा भाग्य साकार।।

विद्या गुरुश्री तुलसी की सन्निधि पाई।
योग साधना और ज्ञान की गहराई।
ज्यों-ज्यों कदम बढ़े आगे फिर खुले प्रगति के द्वार।।

श्रुत सागर में किया रात-दिन अवगाहन।
खोजे रत्न अनेकों कर आगम मंथन।
लिखे सहस्रों ग्रंथ भरा तुमने आगम भंडार।।

लय : बार-बार तोहे---

जैन संस्कार विधि

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

विवाह संस्कार

दिल्ली।

टमकोर निवासी, दिल्ली प्रवासी मदनचद गिड़ीया के सुपौत्र व राकेश कुमार अनिता गिड़ीया के सुपुत्र प्रतीक गिड़ीया का विवाह संस्कार भिलाई निवासी स्व० बहादुर सिंह की सुपुत्री सरस्वती कुमारी के साथ नोएडा में उपासक व संस्कार विमल गुनेचा, प्रकाश सुराणा, पवन गिड़ीया ने विवाह की सभी रश्मों का विधिपूर्वक निर्वहन करते हुए पूरे मंगल मंत्रोच्चार के साथ जैन संस्कार विधि से विवाह संस्कार संपन्न करवाया।

तेयुप, दिल्ली के द्वारा वर-वधू एवं दोनों पक्षों से लिखित में पंजीकृत प्रमाण पत्र पर उनकी सहमति ली गई। तेयुप की तरफ से गिड़ीया परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

मदनचंद गिड़ीया ने सभी संस्कारकों का दोनों परिवार की तरफ से आभार ज्ञापन किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

दिल्ली।

नितिन जैन सिसाय (हरियाणा) निवासी, दिल्ली रोहिणी प्रवासी के नए प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुभाष दुगड़ ने संपूर्ण विधि एवं मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न कराया गया। संस्कारक सुभाष दुगड़ ने उपस्थित सभी पारिवारिकजनों के सर्वांगीण विकास की मंगलकामना की। तेयुप, दिल्ली की तरफ से आभार ज्ञापित किया।

संस्कारक सुभाष दुगड़ ने जैन संस्कार विधि के बारे में बताते हुए त्याग-प्रत्याख्यान करवाए।

दिल्ली।

संस्कारक पवन गिड़िया की विशेष प्रेरणा से सुरेंद्र सुखीजा (पंजाबी) दिल्ली प्रेम नगर, पटेल नगर के नए प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संपूर्ण विधि एवं मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न कराया गया। संस्कारक पवन गिड़िया ने सुरेंद्र सुखीजा के उपस्थित सभी पारिवारिकजनों के सर्वांगीण विकास की मंगलकामना की। तेयुप, दिल्ली की तरफ से आभार ज्ञापित किया।

संस्कारक पवन गिड़िया ने जैन संस्कार विधि के बारे में बताते हुए एवं साथ में मंगलभावना यंत्र का विस्तारपूर्वक वर्णन के साथ पूरी जानकारी सुखीजा परिवार को अवगत कराई। साथ ही पूरे परिवार ने अपनी स्वेच्छा अनुसार त्याग-प्रत्याख्यान भी किए।

सूरत।

सीकर निवासी, सूरत प्रवासी विमल भरतिया के सुपुत्र हेमंत कुमार के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़ व मीठालाल भोगर ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया। संस्कारकों की प्रेरणा से सभी ने अपने सामर्थ्य अनुसार त्याग-प्रत्याख्यान किया।

विमल भरतिया दिगंबर संप्रदाय से जिनके पूर्व में प्रतिष्ठान व पुत्र के क्लनिक का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा करवाया गया। उसी की प्रेरणा से आपश्री ने इस मंगल प्रसंग में जैन संस्कार विधि को अपनाया। हेमंत व उनके पूरे परिवर ने संस्कारकों व सभी पारिवारिकजनों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत द्वारा मंगलभावना पत्रक भेंट किय गया।

✦ *जीवन में जब पाप का उदय होता है तो प्रतिकूलता प्राप्त होती है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

✦ *जीवन में जितना प्रमाद होता है, व्यक्ति उतना ही असफल होता है और जितना अप्रमाद होता है, व्यक्ति उतना ही सफल बनता है।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

❑ आचार्य तुलसी ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

क्या जैन धर्म में ध्यान की परंपरा है?

प्रश्न : आपने अभी कहा कि शरीर को कष्ट देना धर्म नहीं, कष्ट सहना धर्म है। सहने के लिए शरीर को कष्ट देना भी तो जरूरी हो जाता है। अन्यथा धर्म कैसे होगा?

उत्तर : धर्म के अनेक रूप हैं। क्षमा, निर्लोभता, ऋजुता, मृदुता आदि ऐसे रूप हैं, जहाँ कष्ट सहने का नहीं, मन को साधने का अभिक्रम है। इसलिए धर्म करने के लिए शरीर को जान-बूझकर कष्ट देने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। अब रही बात अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों की। दोनों प्रकार की परिस्थितियाँ पैदा होती हैं। इन दोनों स्थितियों को समान भाव से सहने की क्षमता अर्जित करना ही धर्म है। इस तथ्य को एक प्रतीक द्वारा समझा जा सकता है–

एक रोगी अपनी बीमारी की चिकित्सा के लिए डॉक्टर के पास जाता है। डॉक्टर उसे शल्य चिकित्सा का परामर्श देता है। शल्य चिकित्सा में शरीर को कष्ट होता है। डॉक्टर का उद्देश्य कष्ट देने का नहीं है और रोगी का उद्देश्य भी कष्ट से मुक्त होने का है, न कि कष्ट पाने का। फिर भी कष्ट होता है और रोगी उसे सहता है। जिस प्रकार ऑपरेशन शरीर को कष्ट देने के लिए नहीं है, उसी प्रकार संयम या समाधि की साधन भी शरीर को कष्ट देने के लिए नहीं है। ऑपरेशन रोग की चिकित्सा है, इसी प्रकार साधना कषाय की चिकित्सा है। यदि साधना का उद्देश्य शरीर को कष्ट देना ही हो तो मुक्ति का अर्थ ही नहीं रहता। मुक्ति का प्रयोजन है–**सव्वदुक्खविमोक्खणट्ठे**–सब प्रकार के दुःखों से मुक्त होना धर्म-साधना का मूल उद्देश्य है। ऐसी स्थिति में यह तथ्य सर्वथा असंगत और अप्रामाणिक है कि जैन परंपरा में शरीर को कष्ट देना ही धर्म माना गया है।

प्रश्न : जैन परंपरा में कायक्लेश की बात इस रूप में नहीं है तो क्या वहाँ ध्यान की कोई परंपरा है? भगवान महावीर जैन-परंपरा में अंतिम तीर्थंकर हुए हैं। उनके जीवन में ध्यान-प्रयोग की साधना का उल्लेख या वैसी कोई पद्धति भी उपलब्ध है?

उत्तर : भगवान महावीर का समूचा साधना-काल ध्यान और कायोत्सर्ग के प्रयोगों से जुड़ा हुआ है। उन्होंने दीक्षित होते ही कयोत्सर्ग और ध्यान का संकल्प स्वीकार कर लिया। यद्यपि उन्होंने अपने साधना-काल में दीर्घ उपवास भी किए हैं। इसलिए उनके संबंध में 'दीर्घ तपस्वी' शब्द का प्रयोग हुआ है। पर उनकी तपस्या ध्यान शून्य नहीं है। यहाँ भी एक बहुत बड़ी भ्राँति पलती आ रही है। भ्राँति यह है कि भगवान महावीर के दीर्घतपस्वी रूप को पकड़ लिया गया और ध्यान-साधना रूप को छोड़ दिया गया। जिस प्रकार दूसरे साधकों ने केवल ध्यान या केवल उपवास पर बल दिया, वैसे महावीर ने नहीं किया। उन्हें किसी भी क्षेत्र में कोई एकांगी तथ्य मान्य नहीं था। इस दृष्टि से उनका अनेकांत-मूलक दर्शन मूल्यवान है।

भगवान महावीर ने अनुभव किया कि ध्यान का बहुत महत्त्व है, पर उपवास का मूल्य भी कम नहीं है। ध्यान के लिए शरीर निर्दोष होना बहुत जरूरी है। वह निर्दोषता आ सकती है। आहार-परिहार से या आहार-संयम से। उपवास-चिकित्सा ध्यान की पृष्ठभूमि का निर्माण करती है। जो साधक उपवास नहीं कर सकता या आहार-संयम नहीं कर सकता, वह ध्यान का अधिकारी भी नहीं हो सकता। ध्यान की योग्यता अर्जित करने के लिए शरीर और मन दोनों धरातलों को परिष्कृत करना आवश्यक है।

जैन-परंपरा में निर्जरा के बारह भेदों की चर्चा है जो ध्यान के संदर्भ में बहुत महत्त्वपूर्ण है। उपवास, आहार-संयम, विशेष प्रकार की प्रतिज्ञाएँ और गरिष्ठ भाजन का परिहार–ये चारों तत्त्व शरीर-शोधन की दृष्टि से बहुत उपयोगी है। एक ध्यान-साधक इसके संबंध में जागरूक नहीं रहता है तो वह अपनी ध्यान-साधना को और आगे नहीं बढ़ा सकता। इसके बाद आसन-प्रयोग के द्वारा शरीर को साधा जाता है। जब तक आसन सिद्ध नहीं होते हैं, दीर्घकालिक ध्यान का प्रयोग नहीं हो सकता। आसन सिद्ध होने के बाद इंद्रियों और मन की उच्छृंखल गति को नियंत्रित करना आवश्यक है। इंद्रिय-विजय और कषाय-विजय की साधना के अनंतर मानसिक दोषों की विशुद्धि का उपाय निरूपित किया गया है। इस स्तर पर पहुँचने के बाद अहं-विसर्जन और समर्पण का अभ्यास जरूरी है। जब तक साधक के भीतर का अहं नहीं गलता है, वह साधना के प्रति भी समर्पित नहीं हो सकता। समर्पित साधक अपनी ज्ञान-चेतना को विकसित करने के लिए स्वाध्याय का आलंबन लेता है, तब कहीं जाकर ध्यान की पृष्ठ-भूमि निर्मित होती है। जो साधक इन सब स्थितियों से गुजरे बिना सीधा ही ध्यान की साधना स्वीकार कर लेता है, वह अधिक समय तक चल नहीं सकता। ध्यान की निष्पत्ति है–व्युत्सर्ग। इस प्रकार व्यवस्थित साधना-पद्धति का आलंबन लेने वाला सहज भाव से आगे बढ़ जाता है।

ध्यान की पद्धति से संबधित प्रश्न का जो अंश है, उसका समाधान है–'आयारो।' आयारो में ध्यान-साधना के इतने बीज बिखरे पड़े हैं, जिन्हें व्यवस्थित करने और विस्तार देने से एक सांगोपांग साधना-पद्धति का निर्धारण किया जा सकता है। इसके लिए गंभीर और व्यापक दृष्टि से आचारांग सूत्र के अध्ययन की अपेक्षा है।

(क्रमशः)

तुलसी-प्रबोध

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

संक्षिप्त जीवन झाँकी

(१५०) 'ॐ तुलसी जय तुलसी' पावन मंत्र महामंगलकारी,
श्रेयससाधक भवभ्रमबाधक सुखसंपादक हितकारी,
हो सुजना! आस्था रो कवच सुघड़ भयभांजणहार हो।।

(१५१) भव-भव शरणो म्हांनै स्वामी अंतर्यामी आप रो,
आर दियो तो पार दिराज्यो पाप ताप संताप रो,
हो गुरुवर! दुर्लभ दुनियां में आप जिसा दातार हो।
हो गुरुवर! 'तुलसी' 'तुलसी' नित बोलै सांस-सितार हो।।

स्तुति-गीत

तुलसी तुलसी

तुलसी तुलसी तुलसी तुलसी तुलसी है प्राणां स्यूं प्यारो।
तुलसी जीवन री ऊर्जा है, तुलसी है आंख्यां रो तारो।।

(१) युगद्रष्टा युगस्रष्टा तुलसी, तुलसी इं युग री धड़कन है,
तुलसी चरणां रो परस मिल्यो, बा माटी बणगी चंदन है।
तुलसी मुसकानां रो झरणो, दीनां दुखियां रो है स्हारो।।

(२) तुलसी तैजस रो दिव्य रूप, तुलसी मानव रो निर्माता,
तुलसी चिंतन रो भव्य स्तूप, तुलसी अंतर अनुसंधाता।
तुलसी रो सिरजण बोल रह्यो, तुलसी अद्भुत सिरजणहारो।।

(३) पौरुष री प्रखर निशाणी है, तुलसी साहस की सहनाणी,
तुलसी री वाणी कल्याणी, तुलसी नवयुग री है क्हाणी।
कमनीय करिश्मो किसमत रो, तुलसी ज्योतिर्मय अंगारो।।

(४) गा राग प्रभाती बार-बार, तुलसी जागृति रो मंत्र दियो,
जीवन री कला सिखावण नै, सक्रिय शिक्षण रो तंत्र दियो।
तुलसी है सदी बीसवीं रो, दिनरात दमकतो ध्रुव तारो।।

(५) खींची है नई लकीरां जो, इतिहासपुरुष तुलसी साचो,
तीर्थंकर पंचम आरै रो, ल्यायो चोथो आरो पाछो।
बरतै तेरापथ शासन में, जिनदेव सरीखो बरतारो।।

(६) लाखां कोडां री अनमोली आस्था रो है आश्रय तुलसी,
जीवन रो महाकाव्य मधुमय, आखर-आखर रसमय तुलसी।
क्यूं रुक्यो अचानक अनुगुंजित, तुलसी सांसां रो इकतारो।।

(७) करुणा वत्सलता स्यूं सींची, तुलसी म्हारी जीवन क्यारी,
सुधि लेवण अबै पधारो जो, साची सारां स्यूं इकतारी।
मन मोर पपीहा ज्यूं तरसै, निरखण निजरां बो उणिहारो।।

लय : जो योगिराज! अनुशासन----

(क्रमशः)

संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

क्रिया-अक्रियावाद

(३) सुकृतानां दुष्कृतानां, निर्विशेषं फलं खलु।
मन्यन्ते विफलं कर्म, कल्याणं पापकं तथा।।

अनात्मदर्शी लोग सुकृत और दुष्कृत के फल में अंतर नहीं मानते और कर्म को विफल मानते हैं–भले-बुरे कर्म का भला-बुरा फल भी नहीं मानते।

चार्वाक दर्शन के प्रणेता आचार्य वृहस्पति की मान्यता में यही तत्त्व है। वे कहते हैं–न आत्मा है, न मोक्ष है, न धर्म है, न अधर्म है, न पुण्य है, न पाप है और न उसका फल भी है। संसार के संबंध में वे वर्तमान जगत् को ही प्रमुखता देते हैं। खाओ, पीओ और आराम करो–इतना ही है जीवन का लक्ष्य उनकी दृष्टि में। पंचभूतों से आत्मा नाम का तत्त्व उत्पन्न होता है और पंचभूतों में ही वह विलीन हो जाता है। पंचभूतों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है, इसलिए वर्तमान जीवन ही उनके लिए सब कुछ है। स्वर्ग, नरक, पुण्य, पाप आदि न होने से केवल वर्तमान सुख की उपलब्धि ही वास्तविक है। यदि पुण्य, पाप आदि की सत्ता वास्तविक है तो नास्तिकों का क्या होगा? उनका भविष्य कितना अंधकारमय और दुःखपूर्ण होगा! क्षणिक वासना-तृप्ति के लिए क्रूर होना समाज, परिवार और राष्ट्र के लिए भी हितकारक नहीं है।

नास्तिकों की क्रूरता को देख आचार्य सोमदेव ने राजा के लिए कहा है कि उसे नास्तिक दर्शन का विद्वान होना चाहिए। जो राजा उसे जानता है वह राष्ट्र के कष्टों का उन्मूलन कर सकता है। नेता यदि मृदु होता है तो उस पर अनेक व्यक्ति चढ़ आते हैं, जब तक उसे दबा देते हैं। अन्यायों को कुचलने के लिए बिना कठोरता के काम नहीं चलता। गीता के सोलहवें अध्याय में जो आसुरी स्वभाव का वर्णन है, वह नास्तिकों का ही स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करता है।

(४) प्रत्यायान्ति न जीवाश्च, न भोगः कर्मणां ध्रुवः।
इत्यास्थातो महेच्छाः स्युः, महारंभपरिग्रहाः।।

जीव मरकर वापस नहीं आते, फिर से जन्म धारण नहीं करते और किए हुए कर्मों को भोगना आवश्यक नहीं होता–इस आस्था से उनमें महत्त्वाकांक्षाएँ पनपती हैं। वे महा-आरंभ करते हैं और परिग्रह का महान् संचय करते हैं।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

मार्ग बोध

ज्ञान मार्ग–

प्रश्न-२४ : क्या ज्ञान की उपलब्धि क्षयोपशम से होती है?
उत्तर : प्रथम चार ज्ञान ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम व केवल ज्ञान उसके क्षय से उपलब्ध होता है।

प्रश्न-२५ : ज्ञान और अज्ञान में क्या अंतर है?
उत्तर : ज्ञान और अज्ञान दोनों क्षयोपशमजन्य है। मति ज्ञान-मति अज्ञान, श्रुत ज्ञान-श्रुत अज्ञान व अवधि ज्ञान-विभंग अज्ञान में कोई अंतर नहीं है। सम्यक् दृष्टि का ज्ञान–ज्ञान व मिथ्या दृष्टि का ज्ञान–अज्ञान है। मिथ्यात्व-सहवर्ती होने के कारण ही वह अज्ञान कहलाता है। जो अज्ञान औदयिक है, उसका यहाँ उल्लेख नहीं है।

प्रश्न-२६ : ज्ञान पाँच हैं अज्ञान तीन, ऐसा क्यों?
उत्तर : मनःपर्यव ज्ञान व केवल ज्ञान सिर्फ सम्यक् दृष्टि संयति के ही होता है, इसलिए अज्ञान तीन ही हैं।

प्रश्न-२७ : दर्शन किसे कहते हैं?
उत्तर : ज्ञेय पदार्थ का विशद रूप में बोध न होकर मात्र अस्तित्व का बोध होता है, जिसका कोई आकार नहीं बन पाता, उसे दर्शन कहते हैं। इसे निराकार उपयोग या निर्विकल्प उपयोग भी कहते हैं। इसके चार भेद हैं–चक्षु, अचक्षु, अवधि व केवल दर्शन।

प्रश्न-२८ : चारों दर्शन का स्वरूप क्या है?
उत्तर : चक्षु के सामान्य बोध को चक्षु दर्शन व शेष इंद्रिय तथा मन के सामान्य बोध को अचक्षु दर्शन कहते हैं। अवधि और केवल के सामान्य बोध को क्रमशः अवधि दर्शन और केवल दर्शन कहते हैं।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य जंबू

अभिनिष्क्रमण और दीक्षा

प्रभात के समय विशाल जनसमूह के साथ वैरागी जंबू का मुनि-दीक्षा स्वीकार करने के लिए घर से अभिनिष्क्रमण हुआ।

आचार्य सुधर्मा के द्वारा श्रेष्ठीकुमार जंबू ने पाँच सौ सत्ताईस व्यक्तियों के साथ वी०नि० १ वि०पू० ४६९ में राजगृह के गुणशीलचैत्य में मुनि-दीक्षा ग्रहण की।

मुनि जीवन में जंबू

मुनि जंबू कुशाग्र बुद्धि के स्वामी थे। वे अपनी सर्वग्राही एवं सद्यःग्राही प्रतिभा के द्वारा आचार्य सुधर्मा के अगाध ज्ञानसिंधु को अगस्त्य ऋषि की तरह पी गए।

आगम की अधिकांश रचनाएँ जंबू के प्रिय संबोधन से प्रारंभ हुई। 'जंबू! सर्वज्ञ श्री वीतराग भगवान् महावीर से मैंने ऐसा सुना है।' आचार्य सुधर्मा का यह वाक्य आगम-साहित्य में अत्यंत विश्रुत है।

समग्र सूत्रार्थ ज्ञाता, विश्रुत कीर्ति, विविधि गुणों के धारक जंबू को आचार्य सुधर्मा ने अपने पद पर आरूढ़ किया। आचार्य पद ग्रहण के समय जंबू की अवस्था छत्तीस वर्ष की थी। आचार्य पद ग्रहण का समय वी०नि० २० (वि०पू० ४५०) माना गया है।

अंतिम केवली

वी०नि २० (वि०पू० ४५०) में श्रमण सहस्रांशु आचार्य सुधर्मा का निर्वाण और आचार्य जंबू को केवलज्ञान प्राप्त हुआ। तीर्थंकर महावीर के बाद केवली-परंपरा में जंबू तृतीय केवलज्ञानी बने। जंबू का आचार्य पद ग्रहण और केवलज्ञान-प्राप्ति के प्रसंग का संवत् समय एक ही है।

जंबू समर्थ आचार्य थे एवं निर्मल ज्ञानज्योति के देदीप्यमान पुंज थे। इनके समय तक धर्मसंघ में कोई भेद-रेखा नहीं उभरी थी। श्वेतांबर और दिगंबर दोनों परंपरा सुधर्मा और जंबू को समान रूप से सम्मान प्रदान करती हैं। इस समय तक विकास का कोई भी द्वार अवरुद्ध नहीं था।

आचार्य जंबू चरमशरीरी थे एवं अंतिम सर्वज्ञ थे।

समय संकेत

आचार्य जंबू सोलह वर्ष तक गृहस्थ जीवन में रहे। मुनि पर्याय के कुल चौंसठ वर्ष में चौवालीस वर्ष तक उन्होंने युगप्रधान पद को अलंकृत किया। उनकी संपूर्ण आयु अस्सी वर्ष की थी। जन-जन को ज्ञान-रश्मियों से आलोकित कर ज्योतिपुंज आचार्य जंबू वी०नि० ६४ (वि०पू० ४०६) में निर्वाण पद को प्राप्त हुए।

दिगंबर एवं श्वेतांबर–दोनों परंपराओं के अभिमत से ज्योतिपुंज जंबू अंतिम मुक्तिगामी रहे हैं।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
5 - 11 जुलाई, 2021

✦ *अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम व्यक्ति को गलत कार्यों से बचने की प्रेरणा देते हैं।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

नारनौंद

आचार्यश्री तुलसी जी की पुण्यतिथि का आयोजन शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन के तत्त्वावधान में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र से हुआ।

सभा के उपाध्यक्ष हनुमान प्रसाद जैन ने सभी आगंतुकों का स्वागत भाषण से किया। महिला मंडल की अध्यक्षा सुमन जैन ने आचार्य तुलसी जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। साध्वी कुंथुश्री जी ने विशाल अध्यात्म परिषद को संबोधित करते हुए कहा कि विश्व क्षितिज पर अनेक महापुरुष अवतरित हुए। उनमें एक अभिधान गौरव से लिया जाता है आचार्यश्री तुलसी। वे विराट व्यक्तित्व के धनी थे। तेरापंथ के नवमाधिशास्ता विश्व की विरल विभूति थे। आचार्य तुलसी २०वीं सदी के देदीप्यमान दीवाकर थे। अलौकिक राष्ट्रसंत थे, जिन्होंने धर्मावृत्ति की नैतिक मूल्यों की स्थापना कर अणुव्रत का शंखनाद किया। पाँव-पाँव चलकर विश्व को चमकाया। जन-कल्याण के लिए अणुव्रत नया मोड़ विसर्जन समण श्रेणी आदि अनेक महत्त्वपूर्ण अवदान दिए। मानवता के दीप जलाए, युग-युग आभारी रहेगा। यह तेरापंथ समाज, जैन समाज, समस्त मानव समाज युगपुरुष युग-प्रधान आचार्य तुलसी श्रद्धा की पुण्यतिथि पर मेरा भावभरा नमन।

साध्वी कंचनरेखा जी ने आचार्य तुलसी को एक क्रांतिकारी आचार्य बताया। साध्वी सुमंगला जी, साध्वी सुलभयशा जी भगिनीद्वय ने सुमधुर गीत से श्रोताओं का ध्यान आकर्षित कर लिया।

प्रिया जैन एवं प्रियंका और शालू ने गीतिका प्रस्तुत की। जींद से समागत राजेश जैन, कुणाल जैन, नरेश जैन, मास्टर नारायण सिंह जैन, महिला मंडल अध्यक्षा कांता जैन, सभाध्यक्ष खजानचंद जैन आदि वक्ताओं ने गुरुदेव तुलसी जी के प्रति भावपूर्ण श्रद्धांजलि समर्पित की।

स्थानीय घनश्याम जैन, सीमा बुलेटिन संपादक, सभाध्यक्ष राजबीर जैन ने श्रद्धासिक्त भाव प्रस्तुत किए। आभार व्यक्त रामनिवास जैन ने किया। कार्यक्रम में जैन-अजैन सभी वर्ग के भाई-बहन उपस्थित हुए।

कार्यक्रम को सफल बनाने में हनुमान जैन, सुमन जैन व राहुल जैन, कृष्ण जैन, देवेंद्र व्यास आदि का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन देवेंद्र व्यास ने किया। मंगलपाठ से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

आचार्यश्री तुलसी की २५वीं पुण्यतिथि के विविध आयोजन

२०वीं सदी के देदीप्यमान दीवाकर थे आचार्य तुलसी

मंडी आदमपुर

स्थानीय तेरापंथ भवन में गणाधिपति गुरुदेव तुलसी जी की २५वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने कहा कि गुरुदेव तुलसी तेरापंथ धर्मसंघ के नवमें अनुशास्ता थे। कार्तिक शुक्ला-२, १९७१ (२० अक्टूबर, १९१४) के दिन उन्होंने लाडनूं की पुण्य धरा पर जन्म लिया। ११ वर्ष की वय में उन्होंने कालू गुरु के करकमलों से संयम स्वीकार किया। २२ वर्ष की लघुवय में वे विशाल तेरापंथ धर्मसंघ के अनुशास्ता बन गए। शिष्य-शिष्याओं के सर्वांगीण निर्माण के लिए वे निरंतर प्रयत्नशील रहते थे। मानव जाति के हित का चिंतन भी सदा उनके सामने रहता था।

अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन करके वे मानव जाति के मसीहा बन गए। बिना किसी जाति भेद व संप्रदाय भेद के लोगों ने इसे स्वीकार किया। अनेक नास्तिक व्यक्तियों ने इस सार्वभौम धर्म की बात को पसंद किया। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा के संरक्षक घीसाराम, प्रधान विनोद जैन, गुलशन, राधेश्याम, उमा, कांता, योगिता, वर्षा, निधि ने गीत व भाषण के द्वारा अपने आराध्य गुरु तुलसी के प्रति भावांजलि प्रकट की। कार्यक्रम का प्रारंभ सामुहिक जप से हुआ। शासनश्री मुनिश्री ने गुरुदेव तुलसी की आरती का संगान किया।

आकोला

आचार्य तुलसी मानवता के मसीहा थे। उन्होंने मानव चेतना के विकास के लिए अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। ये बात सोमवार को मुनि मोहजीत कुमार जी ने तेरापंथ भवन में तेरापंथ के नवमें आचार्य तुलसी के २५वें महाप्रयाण दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में कही। उन्होंने आचार्य तुलसी को विनयांजलि अर्पण करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी अध्यात्म, नैतिकता, समन्वय, शांति एवं सामाजिक, धार्मिक सौहार्द के महान प्रस्तोता थे। आचार्य तुलसी ने अपने शासन काल में अनेक व्यक्तित्वों का निर्माण किया।

इस अवसर पर मुनिश्री ने अपने जीवन के साथ घटित प्रसंगों का चित्रण किया। धर्मसभा में मुनि जयेश कुमार जी ने कहा कि आचार्य तुलसी का व्यक्तित्व महान था। उन्होंने मानव जाति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। उनका जीवन बहुआयामी था।

भूपालसागर के प्रधान रहे भगवती लाल हिंगड़ ने आचार्य तुलसी को श्रद्धा भरी भावपूर्ण विनयांजलि प्रस्तुत करते हुए अपने जीवन के प्रसंगों को प्रस्तुत किया। इस दौरान सभा अध्यक्ष उदयलाल चपलोत, मंत्री देवीलाल चलपोत, ज्ञानशाला संयोजिका पूजा चपलोत, रेखा चपलोत, सशील मेहता आदि ने विचार प्रकट किए। कपासन से समागत नीतू बाबेल ने तथा तेरापंथ महिला मंडल की सदस्याओं ने भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथ सभा मंत्री नरेंद्र चपलोत ने श्रद्धा अर्पण के साथ सभी का आभार प्रकट किया।

संचालन मुनि भव्य कुमार जी ने आचार्य तुलसी के कृतित्व को मुखर करते हुए काव्यमय भावों में किया।

चेन्नई

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमण पब्लिक स्कूल के प्रांगण में गुरुदेव श्री तुलसी का २५वाँ महाप्रयाण दिवस आयोजित हुआ। श्रद्धालु तुलसी भक्तों ने अपनी आस्था के राम गुरुदेव तुलसी को भावांजलि समर्पित की।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि तेजस्विता, तपस्विता, ओजस्विता, वर्चस्विता और उत्कर्षता के अपार पर्याय का नाम है–गुरुदेव तुलसी। जिन्होंने तेरापंथ की तेजस्विता, जिनशासन की यशस्विता, धार्मिक जगत की वर्चस्विता एवं मानवमात्र की उत्कर्षता के लिए अपने समय, श्रम व शक्ति का नियोजन किया। वे २०वीं सदी के युगनायक, युगदृष्टा व युगपुरुष थे।

साध्वीश्री ने आगे कहा कि आचार्य तुलसी विलक्षण व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने जीवन भर व्यक्ति निर्माण की दिशा में काम किया और अपने सृजनशील हाथों से अनेक व्यक्तियों को तैयार किया।

साध्वी कर्णिकाश्री ने कहा कि आचार्य तुलसी उत्कृष्ट कोटि के साहित्यकार थे। उनका साहित्य सबको बोध प्रदान कर रहा है। साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा कि करिश्माई व्यतित्व के धनी आचार्य तुलसी जिन गलियारों से गुजरे, वहाँ मानवीय विश्वास की ज्योतिर्मय किरणें बिछ गई। उनकी दिव्य चेतना आज भी जन-जन के भीतर दिव्य ऊर्जा का संचार कर रही है। साध्वी समत्वयशा जी ने सुमधुर स्वरलहरी का संगान कर परिषद को तुलसीमय बना दिया। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

तेरापंथ सभाध्यक्ष विमल चिप्पड़, तेयुप अध्यक्ष रमेश डागा, महिला मंडल अध्यक्षा शांति दुधोड़िया, स्कूल के चेयरमैन प्यारेलाल पीतलिया, थली परिषद के अध्यक्ष राकेश खटेड़ ने भक्तिमय भावों के साथ गुरुदेव तुलसी को श्रद्धा का अर्घ्य समर्पित किया। महिला मंडल, चेन्नई की बहनों ने गीतिका एवं संगीता बाफना ने मंगल संगान किया।

माधावरम् ज्ञानशाला के बच्चों ने साध्वी अणिमाश्री जी द्वारा रचित गीत की सुंदर व आकर्षक प्रस्तुति दी। कविता मेड़तवाल व सुमित्रा सुराणा ने अच्छा श्रम किया। आचार्य तुलसी तुलसी को चेन्नई समाज ने तप-जप के साथ साध्वीश्री जी की प्रेरणा से श्रद्धांजलि अर्पित की। तेरह घंटे का अखंड जप एवं लगभग चार सौ भाई-बहनों ने उपवास व एकासन कर गुरुदेव तुलसी को जप व तप की भेंट चढ़ाई।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम

जीन्द

तेयुप तथा टीपीएफ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर योग शिविर का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में किया गया। जींद तेयुप के संरक्षक राजेश जैन द्वारा विभिन्न आसनों तथा प्राणायाम के द्वारा योग करवाए गए। टीपीएफ के आधार स्तंभ डॉ० सुरेश जैन द्वारा प्रेक्षाध्यान के विभिन्न प्रयोगों द्वारा ध्यान साधना करवाई गई।

इस असर पर सभा मंत्री नारायण सिंह रोहिल्या, डॉ० अनिल जैन, युवक परिषद अध्यक्ष आशु जैन, रितेश जैन, कुणाल मित्तल, गौरव जैन, संदीप जैन आदि उपस्थित रहे।

तुषरा

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में जैन भवन में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। स्थानीय योग प्रशिक्षक शुभम मिश्र ने सभी को प्रशिक्षण दिया। सभी श्रावक-श्राविकाओं ने इस प्रशिक्षण का भरपूर लाभ उठाया।

मुनि जिनेश कुमार जी ने योग, प्राणायाम तथा प्रेक्षाध्यान से लाभ के बारे में विस्तार से बताया। मुनिश्री जी ने सभी को ध्यान तथा प्रेक्षाध्यान करवाया। योग प्रशिक्षक मिश्र को पुस्तक से सम्मानित किया गया। मंच संचालन बिरेंद्र जैन ने किया। कार्यक्रम का लाइव टेलीकास्ट ओडिशा सभा के फेसबुक में किया गया। आभार ज्ञापन चंद्रभान जैन ने किया।

विविध कार्यक्रम

पर्वत पाटिया।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर तेरापंथ किशोर मंडल ने बढ़ते पॉल्युशन को ध्यान में रखते हुए दिया साइकिलिंग करने का उद्देश्य, २१ किमी० साइकिलिंग करने के पश्चात पर्वत पाटिया स्थित एसएमसी प्राथमिक शाला क्रमांक ३०२ में वृक्षारोपण किया गया।

कार्यक्रम में तेरापंथ किशोर मंडल सदस्यों के साथ तेयुप अध्यक्ष कांतिलाल सिंघवी की विशेष उपस्थिति रही।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

दक्षिण मुंबई।

साध्वी राकेशकुमारी जी का मंगलभावना समारोह की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा नवकार मंत्र से हुई। मंगलभावना के स्वर में सर्वप्रथम तेयुप के अध्यक्ष पवन बोलिया ने साध्वीश्री जी के विहार एवं स्वास्थ्य के प्रति मंगलकामना की एवं सामुहिक खमतखामणा किया। महिला मंडल ने सुमधुर विदाई गीतिका की प्रस्तुति दी।

महाप्रज्ञ विद्या निधि फाउंडेशन के उपाध्यक्ष गणपत डागलिया ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। अभातेयुप के राष्ट्रीय सीपीएस प्रभारी देवेंद्र डागलिया, अणुव्रत समिति कोषाध्यक्ष लतिका डागलिया, महिला मंडल संयोजिका रेणु डागलिया, वरिष्ठ श्रावक ताराचंद बरलोटा ने भी साध्वीश्री जी के प्रति मंगलभावना व्यक्त की। कुलदीप बैद, पंकज सुराणा, श्वेता सुराणा, अशोक धींग ने भी साध्वीश्री के स्वास्थ्य की मंगलकामना की।

साध्वी विपुलयशा जी, साध्वी मलयविभा जी ने भी श्रावकों को सेवा के लिए साधुवाद दिया। साध्वी राकेश कुमारी जी ने कहा कि एक वर्ष और एक दिन के इस दीर्घ प्रवास में स्वास्थ्य की अस्वस्थता रही पर दक्षिण मुंबई के श्रावकों ने जागरूकता से अपने दायित्व का वहन किया।

कार्यक्रम में नरेंद्र पोरवाल, सौमिल निमजा, प्रदीप ओस्तवाल, महिला मंडल से हुलास बरलोटा, कमलादेवी डागलिया, रेखा बरलोटा, रेणु बोलिया, सौरभ बरमेचा, प्रीति डागलिया आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन तेयुप मंत्री नितेश धाकड़ ने किया। आभार ज्ञापन तेयुप के उपाध्यक्ष अशोक बरलोटा ने किया।

मंगल मिलन समारोह

चंडीगढ़।

संतों का आगमन अपने आपमें मन में प्रसन्नता प्रदान करने वाला होता है। चंडीगढ़ में मुझे अनेकों वर्षों तक प्रवास करने का अवसर प्राप्त हुआ, पर यह प्रथम अवसर है जब मेरा संतों से चंडीगढ़ दिगंबर जैन मंदिर में प्रथम बार मिलन हो रहा है। मेरे मन में बहुत ज्यादा प्रसन्नता है। संतों के साथ मिलकर अपनी भावनाओं को भी अभिव्यक्त करने का प्रयास करूँगा। यह विचार मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने दिगंबर जैन मंदिर के प्रांगण में मुनि भूपेंद्र कुमार जी, पदम कुमारजी के राजस्थान के पदयात्रा करते हुए आगमन पर मिलन समारोह पर व्यक्त की।

मुनि भूपेंद्र कुमार जी ने कहा कि यदि मैं चंडीगढ़ नहीं आता तो यह मेरी पूरी यात्रा अधूरी रह जाती। मैंने अपने मन में संकल्प किया था पंजाब में चंडीगढ़ में जहाँ कहीं भी मुनिप्रवर विराजमान होंगे मैं अवश्य ही दर्शन करूँगा। मेरी भावना साकार रूप ग्रहण कर रही है। यह मेरे मन में बहुत प्रसन्नता की अनुभूति प्रदान करने वाली बनती जा रही है।

इस अवसर पर मुनि पदम कुमार जी पंचकुला तेरापंथ सभा से डॉक्टर देवेंद्र जैन, अणुव्रत समिति तेरापंथ सभा के अध्यक्ष, चंडीगढ़ के वेद प्रकाश जैन, मंत्री सुधीर जैन, विजय शर्मा, रवि चोपड़ा, शांता चोपड़ा के साथ अनेकों व्यक्तियों ने अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन प्रदीप जैन ने किया।

मंगल प्रवेश कार्यक्रम

हैदराबाद।

साध्वी मधुस्मिता जी के राघवेंद्र कॉलोनी में आगमन पर स्वागत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। महिला मंडल की बहनों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। कॉलोनी के विनोद डागा ने सत्संग का महत्त्व उजागर करते हुए साध्वियों को ज्यादा से ज्यादा दिन इसी कॉलोनी में विराजने के लिए निवेदन किया। सुषमा कुंडलिया ने अपने आँगन में साध्वीश्री का स्वागत किया। सिकंदराबाद सभा के सहमंत्री धर्मेंद्र चोरड़िया, बाबूलाल सुराणा, सेवा विभाग के प्रमुख प्रेम बैंगानी एवं तेयुप अध्यक्ष राहुल श्यामसुखा ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वी स्वस्थप्रभा जी ने कहा कि गुरु कृपा व साध्वी मधुस्मिता जी की वत्सलता एवं तीनों सतियों के सहयोग से यहाँ पहुँचकर मैं प्रसन्नता का अनुभव कर रही हूँ। साध्वी मधुस्मिता जी ने कहा कि होसपेट से हैदराबाद तक की यात्रा को हमने गुरुदेव की अनुकंपा आशीर्वाद और शक्ति संप्रेषण से सानंद संपन्न कर हैदराबाद की सीमा में मंगल प्रवेश किया। सहवर्ती साध्वियों की सेवा भावना व हिम्मत की सराहना करते हुए उन्हें प्रोत्साहित किया।

आपने कहा कि हैदराबाद में पहले से विराजित शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी, साध्वी निर्वाणश्री जी एवं साध्वी काव्यलता जी से मिलने की बहुत उमंग है। कोरोना का प्रभाव कुछ कम होने से हमारी भावना साकार हो सकेगी। साध्वीश्री जी ने कहा कि संतों के आगमन से समस्याएँ सुलझती हैं। सुमति का विस्तार होता है। आप लोग सत्संग सुरसरिता में नहाएँ और अपने जीवन को पावन बनाएँ।

कन्या-किशोर संगोष्ठी का आयोजन

भुज।

तेयुप एवं तेमम के संयुक्त तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल एवं तेरापंथ कन्या मंडल के सदस्यों की संयुक्त संगोष्ठी मुनि हिमांशु कुमार जी स्वामी आदि के सान्निध्य में आयोजित हुई। मुनिश्री ने 'कैसे करें स्वर्णिम भविष्य का निर्माण' विषय पर विस्तृत प्रेरणा प्रदान की। मुनि हेमंत कुमार जी ने तीन C – कन्फर्मेशन, कमिटमेंट, क्लेरिटी के माध्यम से जीवन को श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा दी।

मुनि हिमांशु कुमार जी ने किशोर पीढ़ी को विषय के ऊपर प्रेरणा प्रदान करते हुए स्वर्णिम भविष्य के विशिष्टतम पहलू प्रदान किए। लगभग ४५ किशोर-कन्या साथियों ने जीवनोपयोगी विषय पर मार्गदर्शन प्राप्त किया। तेयुप मंत्री आशीष बाबरिया ने आभार ज्ञापन किया।

मुनिश्री का भुज का अल्प प्रवास काफी प्रभावक रूप में सबको एक नई प्रेरणा प्रदान कर रहा है। इसी कड़ी में किशोर-कन्या साथियों के जीवन के लिए एक विशिष्ट मार्गदर्शन सरल तरीके से मुनिप्रवर से प्राप्त होना अमूल्य अवसर था।

जैन विद्या कार्यशाला-२०२१ बैनर अनावरण

अहमदाबाद।

अभातेयुप एवं समण संस्कृति संकाय, जैन विश्व भारती, लाडनूं के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित जैन विद्या कार्यशाला-२०२१ का बैनर अनावरण तेयुप द्वारा शासनश्री साध्वी सरस्वती जी एवं शासनश्री साध्वी रतनश्रीजी के सान्निध्य में एवं अगले दिन शासनश्री साध्वी रामकुमारी जी के सान्निध्य में किया गया।

नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए तेयुप अध्यक्ष पंकज डांगी, अभातेयुप सदस्य अपूर्व मोदी, दिनेश बुरड़ एवं उपस्थित समस्त पदाधिकारीगण एवं कार्यशाला संयोजकों ने साध्वीश्री जी के सम्मुख जैन विद्या कार्यशाला-२०२१ के बैनर का अनावरण किया। साध्वी सरस्वती जी ने उच्चारण शुद्धि का विशेष ध्यान रखते हुए जैन विद्या कार्यशाला में सभी को जुड़ने का प्रेरणा पाथेय प्रदान किया। शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने जैन विद्या कार्यशाला-२०२०-२०२१ आचार्यश्री महाश्रमण की अनुपम कृति तीन बातें ज्ञान की पर आधारित है। साध्वीश्री जी ने रोचक कहानी के माध्यम से सभी को कार्यशाला में जुड़ने के लिए प्रेरित किया। शासनश्री साध्वी रामकुमारी जी ने जैन विद्या कार्यशाला में अधिकाधिक युवकों को जुड़ने के लिए प्रेरणा दी। जैन विद्या परीक्षा में ११०० व्यक्तियों को जोड़ने का लक्ष्य दिया।

तेयुप अध्यक्ष पंकज डांगी ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए जैन विद्या कार्यशाला-२०२१ के बारे में जानकारी दी। साथ ही सभी संयोजकों और साथी सदस्यों को गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी १००० से अधिक जैन विद्या के फार्म भरवाने का आह्वान किया। अभातेयुप सदस्य अपूर्व मोदी ने अहमदाबाद परिषद की शाब्दिक प्रशंसा करते हुए सभी को कार्यशाला में सहभागी बनने को प्रोत्साहित किया। अभातेयुप सदस्य एवं व्यक्तित्व कार्यशाला के सह-प्रभारी दिनेश बुरड़ ने अपने भावों की अभिव्यक्ति देते हुए कार्यशाला को अपने ज्ञान में अभिवृद्धिकारक बताया और सभी को कार्यशाला का लाभ लेने के लिए उत्साहित किया। तेयुप अध्यक्ष ललित मंगवानी ने जैन विद्या कार्यशाला-२०२१ की विस्तृत जानकारी दी।

कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री संदीप मांडोत ने किया। कार्यक्रम में तेयुप उपाध्यक्ष अरविंद संकलेचा, ललित बेगवानी, सहमंत्री सागर सालेचा आदि अनेक पदाधिकारीगण एवं कार्यसमिति सदस्यों की उपस्थित रही।

मंगल प्रवेश समारोह

मैसूर।

साध्वी मंगलप्रज्ञा जी श्री रंगपटना से विहार कर भगवान महावीर दर्शन हॉस्पिटल पधारे। साध्वीश्री ने मैसूर की सीमा में प्रवेश करते हुए कहा कि गुरुदेव की आज्ञा को सर्वोपरि मानते हुए बैंगलोर चातुर्मास के पश्चात मैसूर की ओर विहार करते हुए आज मैसूर का पहला पड़ाव पार कर लिया। साध्वीश्री जी ने कहा कि गांधीनगर, बैंगलोर से विहार करते हुए तुलसी चेतना केंद्र, बिड़दी, रामनगर, मद्दुर होते मंड्या पधारे।

महावीर जिनालय के अध्यक्ष कांतिलाल ने साध्वीश्री का भावभीना स्वागत करते हुए कहा कि जिनालय में सभी जैन समुदाय ने आर्थिक सहयोग दिया है। मैसूर सीमा प्रवेश के अवार पर सभा उपाध्यक्ष राजेश आच्छा ने स्वागत करते हुए कहा कि मैसूर श्रावक समाज का शौभाग्य है कि गुरुदेव ने महती कृपा कर साध्वीश्री का चातुर्मास मैसूर को फरमाया। सभा मंत्री अशोक दक, वरिष्ठ श्रावक हीरालाल, तेयुप के अध्यक्ष दिनेश दक, निवर्तमान अध्यक्ष महावीर देरासरिया, मंत्री विनोद मुणोत, सहमंत्री विक्रम, साकेत, संगठन मंत्री सेजल कोठारी, सुरेश ललित, चेतन, महिला मंडल उपाध्यक्ष इंदु पितलिया, मंत्री सीमा देरासरिया आदि अनेक गणमान्यजन एवं छोटे-छोटे बच्चे उपस्थित थे।

✦ *आत्मा की शुद्धि होने पर जो आनंद मिलता है, वह भी सुख है तथा बाह्य वस्तुओं से भी सुख की प्राप्ति हो सकती है। एक आध्यात्मिक सुख है तो दूसरा भौतिक सुख है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
5 - 11 जुलाई, 2021

✦ *ध्यान व जप करना साधना है तो मेरा चिंतन है हर क्रिया में समत्व का अभ्यास रहे तो चलना, बोलना, लिखना आदि भी साधना हो सकती है।*

–आचार्य श्री महाश्रमण

संबोध कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद।

टीपीएफ द्वारा सामूहिक सामायिक के साथ संबोध कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुई। टीपीएफ अध्यक्ष मोहित बैद ने पधारे हुए सभी सदस्यों का स्वागत किया। मुख्य वक्ता कन्दर्प दुधोड़िया ने समायिक पाठ की व्याख्या करते हुए सावद्य योग का अर्थ, ६ कोटी, ८ कोटी और ९ कोटी की सामायिक, करण व योग का विवेचन किया।

कार्यक्रम परस्पर संवादात्मक एवं रोचक रहा, जिसमें सभी की जिज्ञासाओं का समाधान किया गया व श्रोताओं को काफी सीखने को मिला। दक्षिण जोन अध्यक्ष दिनेश धोका ने भी अपना ज्ञान साझा किया और जैनिज्म की कई बातें बताई।

इस कार्यक्रम में लगभग २५ लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष प्रकाश बैंगानी ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री सुनील पगारिया ने किया।

हैदराबाद।

टीपीएफ द्वारा सामायिक के साथ संबोध कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार महामंत्र के सामुहिक उच्चारण से हुई। शाखा अध्यक्ष मोहित बैद ने सभी सदस्यों का स्वागत किया। मुख्य वक्ता कंदर्प दुधोड़िया ने पिछले सप्ताह विष्य 'सामायिक पाठ' का सारांश दिया व सामायिक आलोचना पाठ का विवेचन किया। कार्यक्रम काफी परस्पर संवादात्मक एवं रोचक रहा, जिसमें सभी की जिज्ञासाओं का समाधान किया गया।

इस कार्यशाला में लगभग २० लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन टीपीएफ उपाध्यक्ष प्रकाश बैंगानी ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री सुनील पगारिया ने किया।

टीका उत्सव का आयोजन

हैदराबाद।

टीपीएफ द्वारा टीका उत्सव आयोजित किया गया। तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद, तेमम, तेयुप, टीपीएफ व जैन तेरापंथ वेलफेयर सोसाइटी के संयुक्त सहयोग से कोविड महामारी को हराने के लिए वैक्सीन कैंप लगाया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी, साध्वी निर्वाणश्री जी व साध्वी काव्यलता जी आदि के मगलपाठ से हुआ। जैन सेवा संघ के अध्यक्ष अशोक बरमेचा, तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के उपाध्यक्ष बाबूलाल बैद व तेरापंथ वेलफेयर सोसाइटी के मैनेजिंग ट्रस्टी मनोज दुगड़ ने अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित की। टीका मेले में ३०० से अधिक लोगों को वैक्सीन लगवाई गई। टीका उत्सव का मुख्य उद्देश्य था कि व्यक्ति स्वयं भी सुरक्षित रहें और दूसरों को भी सुरक्षित रखें।

टीका उत्सव के संयोजक सिकंदराबाद सभा मंत्री सुशील संचेती व कोषाध्यक्ष मुकेश चोरड़िया, तेयुप से अजीत कुंडलिया, उपाध्यक्ष पीयूष बरड़िया, महिला मंडल से कविता आच्छा व अनिता गीड़िया, टीपीएफ से कोषाध्यक्ष पंकज संचेती, पुनीत दुगड़, जैन तेरापंथ वेलफेयर सोसाइटी से कोषाध्यक्ष प्रेम दुगड़ व महासभा कार्यकारिणी सदस्य नवीन दस्सानी रहे।

कार्यक्रम के आयोजन में कमल सेठिया व मनोज बोथरा का विशेष सहयोग रहा।

इस असर पर तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुरेश सुराणा, जैन तेरापंथ वेलफेयर सोसाइटी चेयरमैन महेंद्र भंडारी, महिला मंडल अध्यक्ष प्रेम पारख, मंत्री अंजु चोरड़िया, तेयुप अध्यक्ष राहुल श्यामसुखा, मंत्री अतुल डूंगरवाल, टीपीएफ अध्यक्ष मोहित बैद, सुनील पगारिया की उपस्थिति रही व सभी संस्थाओं के कार्यकारिणी सदस्यों का पूर्ण सहयोग रहा।

वैक्सीनेशन कैंप व स्वास्थ्य परीक्षण

हैदराबाद।

टीपीएफ द्वारा संचालित आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चल चिकित्सालय द्वारा गुमानसिंह डामोर (सांसद रतलाम-झाबुआ) के सहयोग से त्रिदिवसीय वैक्सीनेशन कैंप व स्वास्थ्य परीक्षण का आयोजन किया गया।

शिविर का शुभारंभ १३ जून को शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बामनिया में सांसद गुमानसिंह डामोर व टीपीएफ कैंप ऑफिस प्रबंधक कमलेश भाटी द्वारा फीता काटकर किया गया।

टीपीएफ कैंप ऑफिस प्रबंधक कमलेश भाटी ने बताया कि इस चल चिकित्सालय वैन में अत्याधुनिक सुविधाओं सहित जनरल फिजिशियन, नैत्र रोग, दंत रोग, ईसीजी, आपातकालीन सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इस वैन का संचालन टीपीएफ द्वारा किया जा रहा है। यह चिकित्सालय २०१२ से संचालित है तथा १६ राज्यों में भ्रमण कर लगभग २ लाख मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण किया जा चुका है।

शिविर में डॉ० वसीम खान, मेडिकल ऑफिसर, डॉ० भरत रावत, डेंटल सर्जन, भूरालाल कटारा, ऑप्टोमेट्रिस्ट ने सेवाएँ प्रदान की। त्रिदिवसीय वैक्सीनेशन कार्यक्रम में १३ जून को बामनिया में ६०, १४ जून करवड़ में ५५, १६ जून सारंगी में १०० लोगों का वैक्सीनेशन किया गया। साथ ही लगभग १२० लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण कर दवाइयाँ उपलब्ध कराई गई।

शिविर को सफल बनाने में बामनिया के भाजपा कार्यकर्ताओं, तेयुप बामनिया, टीपीएफ, इंदौर के मंत्री सोहित कोटड़िया, करवड़ व सारंगी के स्थानीय लोगों तथा टीपीएफ कैंप ऑफिस टीम का सराहनीय सहयोग रहा।

तेयुप द्वारा विविध कार्यक्रमों के आयोजन

रक्तदान में उत्कृष्ट कार्य के लिए कर्नाटक सरकार द्वारा सम्मान

विजयनगर।

तेयुप अपने त्रिआयामी लक्ष्यों की ओर निरंतर गतिमान है, इसी क्रम में एक निजी ब्लड बैंक में आयोजित समारोह में तेयुप, विजयनगर को कोरोना महामारी के समय प्लाज्मा दान एवं रक्तदान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य एवं अमूल्य सहयोग के लिए कर्नाटक सरकार ने सम्मानित किया।

कर्नाटक सरकार से श्रीनिवास (डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर, बैंगलोर) की अध्यक्षता एवं मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डायमंड स्टार नाम से प्रख्यात कन्नड़ एक्टर श्रीनगर किट्टी ने सम्मान किया। डॉ० श्रीनिवास जी०ए०, जिला स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण अधिकारी, बैंगलोर और डॉ० महेश कुमार एस०एस० भी उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम में परिषद अध्यक्ष पवन मांडोत, मंत्री देवांग बैद एवं ब्लड डोनेशन संयोजक अमित दक का सम्मान हुआ। तेयुप अध्यक्ष पवन मांडोत ने अभातेयुप द्वारा किए जा रहे समस्त मानव सेवा के कार्यों की जानकारी भी दी एवं इस कोरोना काल में विजयनगर परिषद द्वारा करवाए गए रक्तदान एवं प्लाज्मा दान की जानकारी देते हुए बताया कि इस सत्र में परिषद द्वारा १५५ प्लाज्मा यूनिट डोनेट करवाए गए एवं लगभग २५० से ज्यादा यूनिट रक्त जरूरतमंद पेशेंट्स को अन्य ब्लड बैंक से आपूर्ति करवाई गई। परिषद द्वारा ४ रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा चुका है, जिसमें १६६ यूनिट्स संग्रहित किए गए। पेशेंट को जरूरत पड़ने पर लगभग ८० यूनिट्स अलग से ऑन कोल रक्तदान करवाया गया। अभातेयुप अपनी शाखा परिषदों के माध्यम से अब तक ३००० ब्लड कैंपों के द्वारा ५५००० यूनिट रक्त एवं २००० यूनिट प्लाज्मा डोनेशन करवा चुकी है, जैसा कि विदित है कि अभातेयुप के नाम पर रक्तदान के क्षेत्र में एशिया वर्ल्ड रिकॉर्ड्स एवं गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स भी दर्ज है।

इस अवसर पर परिषद के साथी एवं ब्लड डोनेशन टीम के संयोजक अमित दक का सम्मान भी किया गया, जिन्होंने आज तक ५१ डोनेशन किए गए जिसमें (२६ एसडीपी, २१ आरबीसी एवं १ डब्ल्यूबीसी) शामिल हैं।

मास्क वितरण कार्यक्रम का आयोजन

चिकमंगलूर।

तेयुप एवं टीपीएफ के संयुक्त तत्त्वावधान में कोविड महामारी के मध्य एक अनूठा एवं सेवाभावी कार्य किया गया। जिसमें उच्च स्तरीय मास्क एन-९५ मात्र १०/- रुपये में वितरित किए गए। तेयुप अध्यक्ष महावीर सकलेचा ने कहा कि उच्च क्लालिटी के मास्क बाजार में करीब १०० रुपये में बिकने के कारण आम लोग १०-२० रुपये के सर्जिकल मास्क का उपयोग करते हैं, जिसका इस्तेमाल सिर्फ ३ घंटे तक ही किया जा सकता है, उसके बाद वह पहनने के लायक नहीं रहता। इसलिए तेयुप ने सोचा कि उच्च स्तरीय मास्क को सर्जिकल मास्क के मूल्य पर वितरित करने से लोग अच्छा मास्क पहनेंगे और कोरोना से दूर हो सकते हैं। लगभग पंद्रह दिन से यह कार्य चल रहा है करीब ६५ हजार मास्क लोगों को दिए हैं।

इस अवसर पर टीपीएफ के अध्यक्ष अशोक गादिया ने कहा कि चिकमंलूर में कोरोना का संक्रमण दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा था, जैन समाज सक्रिय हुआ, निःशुल्क एंबुलेंस, ऑक्सीजन कंसन्ट्रेटर सेवा, जरूरतमंद लोगों को खाना, सरकारी अस्पताल में जरूरी इंजेक्शन एवं दवाइयाँ दी गईं।

इस कार्यक्रम के संयोजक रौनक सियाल ने कहा कि हम शीघ्र ही तहसीलदार से मिलकर छोटे-छोटे गाँवों को इसका लाभ मिल सके, ऐसा कुछ कार्य भी करेंगे। तेरापंथ सभा अध्यक्ष गौतमचंद गादिया एवं मंत्री गौतमचंद नाहर ने तेयुप का हौसला बढ़ाया। श्री जैन संघ के अध्यक्ष गौतमचंद सियाल, उपाध्यक्ष संजय जैन ने कहा कि इस कार्य से जैन समाज के कार्यों को चार-चाँद लग गए हैं। इस कार्य को सफल बनाने में नवीन गादिया, हितेश गादिया, मुकेश कोठारी, प्रसन्न डोसी, ब्रिजेश सियाल आदि ने अहम भूमिका निभाई।

✦ *मन में दुर्विचारों का प्रवेश होने देना मन का असंयम और मन की अनपेक्षित चंचलता को कम करना मन का संयम होता है।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
5 - 11 जुलाई, 2021

तेयुप द्वारा रक्तदान शिविर के विविध आयोजन

अमराईवाड़ी-ओढ़व

तेयुप के अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने बताया कि मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव आयाम के माध्यम से इस क्षेत्र में उनका संगठन विशिष्ट कार्य कर रहा है। कोरोना की इन विषम परिस्थितियों में भी विगत एक वर्ष में विविध शिविर और ब्लड ऑन कॉल के माध्यम से कुल ८० यूनिट रक्तदान उनकी परिषद के माध्यम से करवाया गया। मंत्री हेमंत पगारिया ने बताया कि संगठन ने रक्तदान के प्रति अपनी कटिबद्धता दिखाते हुए निरंतर इस क्षेत्र में कार्य किया।

रक्तदान संयोजक दिनेश टुकलिया ने जानकारी दी कि तेयुप, अभातेयुप की शाखा है। अभातेयुप पूरे भारत और नेपाल में अपनी ३५० शाखा परिषदों के माध्यम से अब तक ५ लाख प्लस यूनिट रक्तदान, ३००० से अधिक शिविरों के माध्यम से कर चुकी है। वर्ष २०२० में कोरोना की प्रथम लहर में ३०००० से अधिक यूनिट रक्तदान और कोरोना से गंभीर रूप से संक्रमित रोगियों को ७०० से अधिक यूनिट प्लाज्मा डोनेशन कर एशिया बुक ऑफ रिकार्ड्स और इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड्स में भी नाम दर्ज करवाया है। अभातेयुप द्वारा वर्ष २०२१ की दूसरी लहर में भी विगत दो महीनों में अब तक ७००० से अधिक यूनिट रक्तदान करवाया जा चुका है।

तेयुप अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने इसी प्रकार अनवरत रक्तदान के क्षेत्र में कार्य करने हेतु संगठन की कटिबद्धता जताई और सभी जागरूक रक्तदाताओं के प्रति साधुवाद व्यक्त किया।

विजयनगर

अभातेयुप निर्देशित मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत तेयुप द्वारा रक्तदान शिविर ऑन व्हील का आयोजन वीवीपुरम जैन कॉलेज के सामने किया गया। इस शिविर का आयोजन दी स्टूडेंट सोसायटी के साथ सम्मिलित रूप से किया गया।

इस कार्यक्रम में तेयुप के अध्यक्ष पवन मांडोत ने युवाओं में नई स्फूर्ति का संचार करते हुए उपस्थित सभी तेयुप एवं स्टूडेंट सोसाइटी के युवा कार्यकर्ताओं को प्रेरणा दी। आगे भी ऐसे शिविर करने की बात कही। कैंप का आयोजन लायंस ब्लड बैंक के लिए किया गया।

कार्यक्रम में एमबीडीडी के संयोजक अमित दक ने बताया कि प्रत्येक रक्तदाताओं से व्यक्तिशः रजिस्ट्रेशन कर रक्तदान करवाया गया। महामारी एवं विषम परिस्थिति में भी ३५ यूनिट रक्त एकत्रित करना बड़ी उपलब्धि है। इस अवसर पर तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष महावीर टेबा, पूर्व अध्यक्ष दिनेश मरोठी, एमबीडीडी के कर्नाटक प्रभारी आलोक छाजेड़ आदि भी उपस्थित रहे।

तेयुप मंत्री देवांग बैद ने सहयोगी संस्था दी स्टूडेंट सोसाइटी के रौनक जैन, शशांक पद्मनाभन, मयंक मौर्य, धृति आदि को धन्यवाद प्रेषित किया एवं रक्तदान संयोजक अमित दक के विशेष श्रम के लिए उन्हें साधुवाद दिया।

मैसूर

अभातेयुप के निर्देशानुसार मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के तहत तेयुप के तत्त्वावधान में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम नवकार मंत्र का सामुहिक मंगलाचरण किया गया। तेयुप अध्यक्ष दिनेश दक ने स्वागत किया और रक्तदान शिविर की जानकारी दी। तेयुप, मैसूर, रोटरी मैसूर, ह्यूमन टच, आर०जी०एस० ग्रुप के संयुक्त निर्देशन में मैसूर शहर के ७ विभिन्न जगहों पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

रक्तदान शिविर में ३३३ यूनिट रक्त का संग्रहण हुआ। कर्नाटक के पूर्व शिक्षा एवं चिकित्सा मंत्री और एमएलए एस०ए० रामदास, एमएलए नागेंद, अभातेयुप मैसूर प्रभारी व एमबीडीडी के कर्नाटक राज्य प्रभारी आलोक छाजेड़, अभातेयुप प्रकाशन प्रभारी दिनेश मरोठी, अभातेयुप के कार्य समिति सदस्य संजय बैद सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

पूर्व मंत्री रामदास ने सभी युवाओं से अपील की कि वैक्सीन लगाने से पूर्व रक्तदान जरूर करें।

अभातेयुप, मैसूर प्रभारी आलोक छाजेड़ ने अपने भाव व्यक्त किए। मैसूर परिषद ने इस वर्ष कोरोना महामारी के चलते भी १२५० से ज्यादा यूनिट रक्तदान करवाया और करीब २७४ से ज्यादा लोगों से प्लाज्मा का डोनेशन करवा चुके हैं।

इस अवसर पर महासभा सदस्य महावीर देरासरिया, ट्रस्ट अध्यक्ष भेरूलाल पितलिया, मंत्री मुकेश गुगलिया, तेरापंथ सभा मंत्री अशोक दक, अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष अमरचंद दक, महिला मंडल अध्यक्षा सुधा नवलखा, मंत्री सीमा देरासेरिया, तेयुप सलाहकार सुरेशचंद पितलिया, उपाध्यक्ष चिराग दक, एटीडीसी प्रभारी सुनील देरासरिया आदि अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यगण उपस्थित रहे।

रक्तदान महादान अध्यक्ष देवेंद्र परिहारिया व उनकी टीम, रोटरी मैसूर से रविशंकर व इनकी टीम, ह्यूमन टच से विक्रम व उनकी टीम सहित आदि अनेक महानुभाव अन्य सेंटर पर उपस्थित रहकर रक्तदान शिविर को सफल बनाया।

संयोजक कार्तिक गुगलिया ने रक्तदान शिविर का संचालन किया।

गुरु के प्रति श्रद्धा हो तो सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

रतलाम, २२ जून, २०२१

अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी का त्रिदिवसीय रतलाम प्रवास हेतु आगमन हुआ। महामहिम आचार्यप्रवर एक चुनौती भरी यात्रा संपन्न करके पधारे हैं। आचार्यप्रवर महान संकल्प के धनी हैं।

परम पावन ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी का जीवन शरीर और आत्मा का योग है। धर्म का और आस्तिक दर्शन का यह सिद्धांत है कि शरीर अलग है, आत्मा अलग है। आत्मा और शरीर एक नहीं है। मोटा-मोटी धर्म की पृष्ठभूमि यही है।

आत्मा अलग है, शरीर अलग है तो पुनर्जन्म की बात होती है। आत्मा और शरीर एक ही है तो फिर पुनर्जन्म संभव नहीं लगता। नास्तिक विचारधारा का मंतव्य है कि शरीर और आत्मा अलग-अलग नहीं है। भगवान पार्श्व की परपरा के महान ऋषि कुमारश्रमण केशी के समय की बात है।

मुनि कुमार श्रमण केशी और राजा परदेशी के संवाद को बताते हुए शरीर अलग है, आत्मा अलग है कि संक्षिप्त में जानकारी दी। लोह बणिक के प्रसंग को समझाया। आग्रह में आकर आदमी बढ़िया चीज को छोड़ देता है।

धर्म का मूल आधार है–शरीर अलग है, आत्मा अलग है। ये है तो पूर्वजन्म और पुनर्जन्म है। आत्मा स्थायी है। मरने के बाद शरीर को तो जला दिया जाता है। आत्मा कहीं और जन्म ले लेती है या मोक्ष में चली जाती है। यह सिद्धांत आस्तिक दर्शन और जैन दर्शन का है।

अनंत काल पहले आत्मा थी और अनंत काल बाद भी आत्मा रहेगी और आज भी है। यह आत्मवाद का सिद्धांत है। एक जन्म के बाद दूसरा पुनर्जन्म होता है। हमारी आत्मा ने अनंत जन्म-मरण कर लिए। ८४ लाख जीव योनी में नरक-तिर्यंच, पशु-पक्षी आदि हैं। मनुष्य और देव भी है। इन अलग-अलग योनियों में कितना दुःख-कष्ट होता है।

कर्मों के अनुसार जीव को फल भोगना पड़ता है। जन्म, मृत्यु, बीमारी और बुढ़ापा दुःख हैं। इन दुःखों से छुटकारा पाने के लिए धर्म की साधना की अपेक्षा है ताकि हमारी आत्मा ऐसे परम स्थान को प्राप्त हो जाए, फिर न कभी जन्म न कभी दुःख।

आत्मा अलग, शरीर अलग है, ये बात दिमाग में स्पष्ट हो जाए तो धर्म की पृष्ठभूमि हो जाती है। इन धर्म के सिद्धांतों की मूल बातों को बताने वाले सर्वज्ञ, अर्हत् तीर्थंकर होते हैं, जो राग-द्वेष मुक्त हैं। उनमें एक नाम है–भगवान महावीर। उन्होंने साधना कर केवल ज्ञान, केवल दर्शन, सर्वज्ञता प्राप्त की।

उन्होंने सब कुछ जान लिया फिर दुनिया को बताया कि सिद्धांत क्या है? इन सिद्धांतों के अधिकृत प्रवक्ता तीर्थंकर होते हैं। वर्तमान में हमारी दुनिया में कोई तीर्थंकर नहीं है। तीर्थंकर साधक के लिए देव रूप में आराध्य होते हैं। ये वीतराग राग-द्वेष और जन्म-मरण से मुक्त होते हैं। जिसमें राग-द्वेष नहीं है, वो कभी झूठ नहीं बोल सकता।

इन देवों की अनुपस्थिति में गुरु होते हैं। जो शुद्ध साधु हैं, वह गुरु होता है। पाँच महाव्रत का पालन वाले गुरु आचार्य होते हैं। गुरु पथ दर्शन देने वाले होते हैं। उनके प्रति श्रद्धा हो तो सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं। एक दृष्टांत से समझाया कि गुरु के देखते गलत काम नहीं करना चाहिए। गुरु के प्रति श्रद्धा है तो गुरु तो हृदय में विराजमान होते हैं। वे हर समय देखते रहते हैं। ऐसी श्रद्धा जाग जाए।

कई बार गुरु का मौन भी व्याख्यान है। एक सापेक्ष सूत्र है–जो वाणी ने कहा वो बह गया, जो मौन ने कहा वह रह गया। गुरु के प्रति सम्मान का भाव है, सब बातें अपने आप ठीक हो सकती हैं। गुरु जो त्यागी होते हैं। जीवन में संयम हो, महाव्रती हो। गुरु मिले तो ऐसे भागी, कंचन-कामिनी के त्यागी।

देव हमारे अरहंत हैं, गुरु हमारे शुद्ध त्यागी हैं। धर्म हमारा जैन धर्म है। गाय खूँटे से बँधी रही है तो सुरक्षित रह सकती है। धर्म-संप्रदाय एक खूँटा है। अच्छा जो धर्म लगे स्वीकार कर लें।

जीवन में सही समझ के साथ देव, गुरु, धर्म को स्वीकार किया जाता है, जो यथार्थ लगे। एक परंपरागत होता है। एक समझ के साथ स्वीकार किया जाता है, जैसे राजा परदेशी ने स्वीकार किया। सभी धर्मों में बहुधा अच्छी बातें मिल सकती हैं। कुछ-कुछ सिद्धांतों का अंतर हो सकता है।

साधु त्यागी हो। साधु के पास रुपया-पैसा कुछ भी नहीं होना चाहिए। साधु को न वोट चाहिए न नोट चाहिए। साधु को तो खोट चाहिए। अपनी कमजोरियाँ साधु के पास छोड़ दो।

सांसद गुमानसिंह कई दिनों से हमारे साथ चल रहे हैं। आप चिंतनशील व्यक्ति हैं। धर्म को चिंतन-समझ के साथ स्वीकार करना, वो एक अच्छी बात हो जाी है। देव-गुरु, धर्म के प्रति श्रद्धा रहे। जीवन आदमी का अच्छा रहे। जीवन में सदाचार रहे। जितना आत्मा का उत्थान हो, हमारा राग-द्वेष कम हो। आत्मा कभी साधना करके जन्म-मरण की परंपरा से मुक्ति प्राप्त कर लें।

हर आदमी साधु नहीं बन सकता पर गृहस्थ अवस्था में रहकर जो धर्म का पालन किया जा सके, अणुव्रत आदि छोटे-छोटे नियम हैं। उनका पालन करते भी आदमी उस दिशा में आगे बढ़ सकता है।

आज रतलाम आए हैं। १७ वर्ष पहले हम लोग रतलाम में थे। लोगों में धार्मिक उत्साह बना रहे। खूब अच्छा मंगलमय काम हो। संतों से भी मिलना हो गया है। साध्वी प्रबलयशा जी से मिलना हो गया है। इनका यहाँ चातुर्मास घोषित है।

सांसद गुमानसिंह जो कई दिनों से गुरुदेव के साथ में ही चल रहे थे। आज उन्होंने सपत्नी गुरुदेव से तेरापंथ की सम्यक् दीक्षा स्वीकार की है। गुरुदेव ने भी प्रवचन के माध्यम से गुमानसिंह को जैन धर्म तेरापंथ के विषय में जानकारियाँ दी।

सांसद गुमानसिंह ने अपनी भावना पूज्यप्रवर के स्वागत में अभिव्यक्त की। जो दूसरों का कल्याण करे, ऐसे गुण मुझे गुरुदेव में मिले। आज हिंसा के दौर में अहिंसा यात्रा की अपेक्षा है। मुझे ऐसा लगा कि गुरुदेव के इस मिशन में सबको जुड़ना चाहिए। ये मानव कल्याण का मार्ग है। जीवन विज्ञान के माध्यम से भारत को विश्व-गुरु बना सकते हैं। जीवन-विज्ञान नई शिक्षा नीति का हिस्सा बने।

पूज्यप्रवर के स्वागत व अभिवंदना में तेरापंथ महिला मंडल गीत से, तेरापंथ सभा अध्यक्ष अशोक दक, टीपीएफ अध्यक्ष अंकित बरमेचा, तेयुप गीत से, एडवोकेट रवि जैन (रतलाम का प्रथम तेरापंथ परिवार), मालवा सभा के अध्यक्ष पूनमचंद मरलेचा, ज्ञानशाला ज्ञानार्थी प्रस्तुति ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
5 - 11 जुलाई, 2021

✦ *व्यक्ति आकृति से नहीं, प्रकृति से अधम अथवा महान् बनता है।*

–आचार्य श्री महाश्रमण

अपनी आत्मा को दुरात्मा बनने से बचाएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

नामली, २५ जून, २०२१

तेरापंथ के राम आचार्यश्री महाश्रमण जी रतलाम को तृप्त कर और अधिक प्यास बढ़ाकर भीलवाड़ा के लिए प्रस्थित हो गए हैं। महामानव ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि चार शब्द हैं–परमात्मा, महात्मा, सदात्मा, दुरात्मा। इन चारों शब्दों में आत्मा तो है ही। एक आत्मा के आगे परम लगा है, दूसरे के आगे महा, तीसरे के आगे सद् लगा है। चौथे शब्द में आत्मा से पूर्व दुर् उपसर्ग लगा है।

आत्मा के चार प्रकार हो जाते हैं। सबसे उच्च कोटि का तो है, परमात्मा। मोक्ष में गई आत्माएँ परम आत्माएँ हैं। केवलज्ञानी आत्मा को किसी अपेक्षा से परमात्मा मान ले। सिद्ध आठों कर्मों से युक्त, केवलज्ञानी चार धाती कर्मों से मुक्त है। दूसरा है–महान आत्मा यानी साधु-संत लोग। महात्मा बनना भी ऊँची बात है। पूरी दुनिया में हमेशा साधु करोड़ों की संख्या में विद्यमान रहते हैं।

हमारे धर्मसंघ को २६१ वर्ष पूरे होने वाले हैं। तेरापंथ धर्मसंघ में इतने समय से साधु परंपरा अविछिन्न चल रही है। अनंतकाल से दुनिया में साधु परंपरा चल रही है और अनंतकाल तक साधु रहेंगे। जो महाव्रती है, वे महात्मा हैं। जिसके मन, वचन और काया में एकता होती है, वह महात्मा होता है। छल-कपट में रहने वाला महात्मा है, नहीं।

तीसरा शब्द है–सदात्मा। महात्मा न भी बन सको पर सदात्मा तो बनो। गार्हस्थ्य

में भी सज्जन रूप में रहो। दुर्जन मत बनो। हिंसा-झूठ आदि जघन्य काम मत करो। सज्जन आदमी सदात्मा है। चौथा शब्द है–दुरात्मा। जिसके मन में कुछ है, वाणी में कुछ है, मन, वचन, काय में एकता नहीं है, वह दुरात्मा दुर्जन है।

दुर्जन और सज्जन के लक्षण एक संस्कृत श्लोक में बताए गए हैं–तीन संदर्भों में दुर्जन और सज्जन की भेद-रेखा खींची गई है। पहली बात है–विद्या। दुर्जन के पास विद्या है तो वह विवाद करता है। सज्जन के पास विद्या है, वो ज्ञान को और बढ़ाने वाली होती है।

दूसरी बात है–धन। एक दुर्जन के पास धन आ गया है तो वह धन का अहंकार करेगा। सज्जन के पास धन है, तो वह दान करेगा। यह दो दृष्टांतों से समझाया। मूँह का जवाब नहीं हाथ का जवाब दें।

रहिमन वे नर मर चूके,
जो कहीं मांगन जाय।
उनसे पहले वे मरे,
जिण मुख निकसत नांय।।

तीसरा संदर्भ है–शक्ति। दुर्जन के पास शक्ति है, हट्टा-कट्टा है, तो वह दूसरों को दुःख देने में शक्ति काम लेता है। सज्जन आदमी में ताकत है, दूसरे सेवा में काम लेता है। गृहस्थों मे दो प्रकार के आदमी हो सकते हैं–दुर्जन आदमी और सज्जन आदमी।

शास्त्रकार ने बात कही है कि जो नुकसान अहित गला काट देने वाला दुश्मन ही नहीं करता वो नुकसान हमारी दुरात्मा बनी आत्मा कर देती है। गला काटने वाला हमारा एक जीवन खत्म कर सकता है। पर हमारी आत्मा जो शत्रु है, वो ऐसा नुकसान कर देती है, कई जन्मों में तकलीफ पानी पड़ सकती है।

जो दुरात्मा है, पाप-हिंसा, हत्या, धोखाधड़ी आदि-आदि करने वाला है, वह जब मृत्यु आती है, तब सोचता है, अरे! मैंने सुना तो है कि नरक गति होती है। देव गति होती है। मैंने तो पाप बहुत किए हैं, अब मेरा क्या होगा? मौत तो सामने खड़ी है। अब मुझे नरक में जाना पड़ा तो। जो सदाचरणों से शून्य है, मृत्यु के निकट आने पर पश्चात्ताप करता है। अब मेरा क्या होगा?

ये पश्चात्ताप हमें न करना पड़े, इसके लिए हम आत्मा को शत्रु न बनने दें। हम अपनी आत्मा को दुरात्मा न बनने दें। गृहस्थ में रहने वाले व्यापार-धंधा करने वाले यह ध्यान दें कि जहाँ तक हो सके ईमानदारी को रखें। अनैतिक काम, बेईमानी, ठगी नहीं करना। मन साफ रहना चाहिए।

अर्थाजन साफ-सुथरा रहे तो आत्मा को दुरात्मा बनने से बचाया जा सकता है। ज्यादा गुस्सा न करें। ज्यादा गुस्सा कहीं काम का नहीं है। आत्मा का नुकसान हो सकता है। जीवन में संयम रहे। धर्म-ध्यान करें, तो आदमी दुरात्मा होने से बच सकता है। हमारी दुरात्मा बनी हमारी आत्मा जितना बड़ा नुकसान कर सकती है, उतना बड़ा नुकसान कोई शत्रु भी नहीं कर सकता। आत्मा कभी दुरात्मा या दुर्जन न बने यह ध्यान रखने की बात है।

आज नामली आए हैं, यहाँ भी जैन परिवार है, सबमें धार्मिकता बनी रहे। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अहिंसा यात्रा : चित्रमय झलकियाँ

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **संदीप कोठारी** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**